सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र

पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती ● प्रभावी ● विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

D.S. Associates

Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 27 February 2026 :: Vol-7 Year-1 :: शुक्रवार । 27 फरवरी 2026 । शक संवत 1947 । फाल्गुन । शुक्ल । एकादशी । :: पृष्ठ-12 । मूल्य - 5 रुपए

असम विधानसभा चुनाव 2026

103 सीटों पर बढ़त का दावा, 40 नए चेहरे मैदान में

■ बिहू से पहले मतदान की मांग ■ विपक्षी समीकरणों पर मुख्यमंत्री का सीधा वार

जन जन विचार
...✍ जोरहाट/दिसपुर

असम की राजनीति में चुनावी तापमान लगातार बढ़ रहा है। हिमंत विश्वशर्मा ने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा दावा किया है कि भारतीय जनता पार्टी राज्य की 126 में से 103 सीटों पर मजबूत स्थिति में है। साथ ही उन्होंने संकेत दिया कि पार्टी इस बार लगभग 40 नए उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारेगी।

मुख्यमंत्री ने यह बयान जोरहाट में मुख्यमंत्री आत्मनिर्भर असम अभियान कार्यक्रम के दौरान दिया। उन्होंने कहा कि चालीस नए चेहरे आएंगे — यह स्वाभाविक है। पार्टी समय के साथ बदलाव करती है।

नई रणनीति : युवा चेहरों पर दांव

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि **शेष पृष्ठ 3 पर**

कांग्रेस-राइजर दल वार्ता में दरार के संकेत

पूर्व कांग्रेसी नेताओं को टिकट देने पर असहजता सीट बंटवारे पर अंतिम फैसला हाईकमान के हाथ

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम में 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले विपक्षी खेमे में खींचतान के संकेत साफ दिखाई देने लगे हैं। गौरव गोगोई अध्यक्ष, असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी, ने स्वीकार किया है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) और राइजर दल) के बीच सीट बंटवारे की बातचीत जारी तो है, लेकिन पहले जैसी सहजता अब नहीं रही। जोरहाट से सांसद गौरव गोगोई ने संकेत दिया कि राइजर दल द्वारा पूर्व अथवा निष्कासित कांग्रेसी नेताओं को उम्मीदवार बनाए जाने के मुद्दे पर पार्टी **शेष पृष्ठ 5 पर**

चुनावी साल में पीएम का दौरा, एक्सप्रेसवे और फ्लाईओवर से साधे जाएंगे समीकरण

सिलचर। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले बराक घाटी में 14 मार्च को प्रस्तावित प्रधानमंत्री का दौरा अब केवल प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि साफ तौर पर चुनावी शक्ति-प्रदर्शन में बदलता दिख रहा है। नरेंद्र मोदी यहां 22,000 करोड़ रु. के पंचग्राम-सिलचर हाई-स्पीड एक्सप्रेसवे और 564 करोड़ रु. के सिलचर फ्लाईओवर की आधारशिला रखेंगे। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि दक्षिण असम में भाजपा अपने विकास नैरेटिव को सबसे बड़े मंच से स्थापित करने की तैयारी में है। **शेष पृष्ठ 8 पर**

मणिपुर में शांति बहाली पर केंद्र-राज्य की उच्चस्तरीय बैठक

मुख्यमंत्री युमनाम खेमचंद सिंह ने प्रधानमंत्री से की मुलाकात

इम्फाल/नई दिल्ली। मणिपुर में जारी सुरक्षा चुनौतियों और शांति बहाली के प्रयासों के बीच मंगलवार को एक महत्वपूर्ण केंद्र-राज्य संवाद हुआ। युमनाम खेमचंद सिंह, मुख्यमंत्री मणिपुर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नई दिल्ली स्थित सेवा तीर्थ में मुलाकात की। यह मुख्यमंत्री खेमचंद सिंह की 4 फरवरी को पदभार ग्रहण करने के बाद प्रधानमंत्री से पहली औपचारिक भेंट थी, जिससे इस बैठक का राजनीतिक महत्व और बढ़ गया।

तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल, **शेष पृष्ठ 9 पर**

जन चिंतन

होली : रिश्तों की परीक्षा

फाल्गुन की पूर्णिमा पर जब होली आती है, तो हम रंगों की तैयारी में जुट जाते हैं। बाजार सजते हैं, मिठाइयां बनती हैं, निमंत्रण भेजे जाते हैं। पर एक सवाल हर वर्ष अनुत्तरित रह जाता है—

क्या हम सचमुच होली के योग्य हो पाए हैं?

होलिका की अग्नि में लकड़ियां जलती हैं, पर क्या हमारे भीतर की ईर्ष्या, अहंकार और कटुता भी जलती है?

हम समाज में संवाद की कमी की शिकायत करते हैं, पर पहल कौन करेगा?

हम रिश्तों के टूटने पर अफसोस जताते हैं, पर उन्हें जोड़ने का साहस कौन दिखाएगा?

होली हमें एक अवसर देती है—अपनी जिद को राख में बदलने का।

रंग चेहरे पर लगते ही पहचान की परतें हल्की हो जाती हैं। अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा, अपनी-पराई—सब एक क्षण के लिए धुंधले पड़ जाते हैं।

पर क्या यह समानता केवल कुछ घंटों की है?

यदि होली के अगले दिन फिर वही दूरी लौट आती है, तो रंगों का यह उत्सव अधूरा रह जाता है। **शेष पृष्ठ 2 पर**

जुबीन गर्ग मृत्यु प्रकरण

फास्ट-ट्रैक कोर्ट पर परिवार से चर्चा करेंगे मुख्यमंत्री

● पांच माह से जेल में आरोपी, सुनवाई की रफ्तार पर सवाल
● 2 मार्च अगली तारीख

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम के चर्चित गायक जुबीन गर्ग की संदिग्ध मौत से जुड़े मामले में फास्ट-ट्रैक कोर्ट गठित करने की मांग ने राजनीतिक और सामाजिक विमर्श को फिर तेज कर दिया है। हिमंत विश्वशर्मा ने कहा है कि वे इस संबंध में जुबीन गर्ग के परिवार से विस्तार से चर्चा कर निर्णय लेंगे।

मुख्यमंत्री ने जोरहाट जिले के मरियानी में एक कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बातचीत में यह संकेत दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान न्यायाधीश द्वारा **शेष पृष्ठ 10 पर**

काजीरंगा में 1.05 लाख जलपक्षियों की रिकॉर्ड मौजूदगी

107 प्रजातियों का दस्तावेजीकरण; रामसर मानदंड से कहीं आगे निकला असम का धरोहर क्षेत्र

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की विश्व धरोहर स्थली काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान) ने एक बार फिर अपनी पारिस्थितिक समृद्धि का प्रमाण दिया है। 7वें काजीरंगा जलपक्षी आकलन में कुल 1,05,540 जलपक्षी, जो 107 प्रजातियों से संबंधित हैं, दर्ज किए गए।

यह सर्वे काजीरंगा-लाओखोवा-

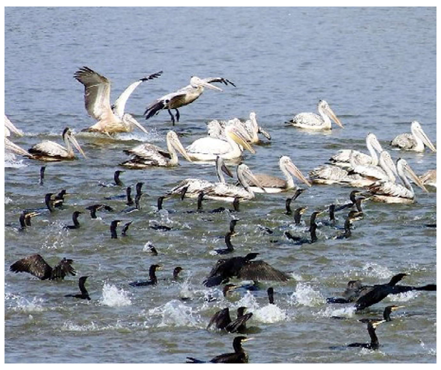

बुरहाचापोरी बाढ़क्षेत्र परिसर में बीते शीतकाल के दौरान किया गया। रामसर मानदंड से आगे आंकड़े बताते हैं कि यह संख्या रामसर मानदंड 5 में निर्धारित 20,000 जलपक्षियों की सीमा से कई गुना अधिक है। यह मानदंड अंतर्राष्ट्रीय महत्व के आर्द्रभूमि की पहचान के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। वन अधिकारियों के अनुसार, यह उपलब्धि काजीरंगा को ब्रह्मपुत्र घाटी में सर्दियों के दौरान जलपक्षियों के **शेष पृष्ठ 11 पर**

अंदर पढ़ें

3. ☞ नई मंत्रिपरिषद में सशक्त भागीदारी का दावा
5. ☞ होली से पहले पटना में बर्ड फ्लू की इंट्री
8. ☞ रूस की राजनीति में 'बिहारी तड़का'
10. ☞ सावित्रीबाई फुले : शिक्षा, साहस और....
4. ☞ रास चुनाव 2026 : सियासत की नई बिसात
7. ☞ पुराणों की दृष्टि में होली : धर्म, भक्ति और लोकमंगल
9. ☞ कारोबारी जगत में हलचल, अनिल अंबानी को बड़ा झटका
11. ☞ जिम्बाब्वे पर जीत के बाद भी खुश नहीं सूर्यकुमार

लालगणेश गणेश मंदिर में रंगबिरंगा फागोत्सव

महिला मंडल ने भजन, जयकारों और 'राम-राम सा' के साथ मनाया होली उत्सव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

लालगणेश स्थित गणेश मंदिर प्रांगण में बुधवार को लालगणेश महिला मंडल द्वारा पारंपरिक उत्साह और भक्ति भाव के साथ रंगबिरंगा फागोत्सव मनाया गया। होली का आनंदमय कथा-भजन संग, होली का राम-राम सा भाव की पावन थीम के साथ आयोजित इस उत्सव में मातृशक्ति ने एकजुट होकर भजन, पूजा-अर्चना और रंगोत्सव का आनंद लिया।

अपराह्न 3 बजे मंदिर प्रांगण में मंडल की सभी सदस्याएं एकत्रित हुईं। सर्वप्रथम गणेश जी महाराज की विधिवत पूजा और अर्चना की गई। इसके पश्चात भजनों की गंगा प्रवाहित हुई, जिसमें महिलाओं ने बारी-बारी से बाबा के दरबार में हाजिरी लगाई। जयकारों और गणेश महाराज की जय के उद्घोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। फागुन के शुभ अवसर पर प्रेम और उल्लास के रंगों से सजे इस आयोजन में रंगोली सजाई गई तथा पारंपरिक ढंग से होली का उत्सव मनाया गया। राम-राम सा के स्नेहिल संबोधन के साथ सभी ने एक-दूसरे को होली की शुभकामनाएं दीं। उत्सव के समापन से पूर्व सभी उपस्थित मातृशक्तियों ने प्रेमद्वार की ज्योति सदा प्रज्वलित रहने की प्रार्थना की। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें मिठाइयों की मिठास ने उत्सव को और भी मधुर बना दिया। महिला मंडल की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली उत्सव भक्ति, प्रेम और सामाजिक समरसता के संदेश के साथ संपन्न हुआ। मंदिर प्रांगण में विभिन्न भाषाओं और पृष्ठभूमि से जुड़ी मातृक्तियों की सहभागिता ने आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की। उल्लेखनीय है कि लालगणेश महिला मंडल द्वारा आयोजित यह फागोत्सव क्षेत्र में सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण का प्रतीक बनता जा रहा है।

होली-टोली : गुवाहाटी में राजस्थानी संस्कृति का उल्लास

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

महानगर में राजस्थानी समाज द्वारा आयोजित 'होली-टोली' का पारंपरिक सांस्कृतिक उत्सव इस वर्ष भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। केदार रोड स्थित श्री रामजी दास धानुका चेरिटेबल ट्रस्ट परिसर में प्रतिदिन रात्रि 10 बजे से आयोजित हो रहे इस कार्यक्रम में लोकधुनों, चंग की थाप और ढोलक की गूंज ने पूरे वातावरण को उत्सवमय कर दिया है।

इस वर्ष अप्रत्याशित जनसमूह को देखते हुए आयोजन स्थल में परिवर्तन किया गया। पूर्व निर्धारित चाय गली में सीमित स्थान होने के कारण कार्यक्रम को विस्तृत परिसर में स्थानांतरित किया गया, जिससे अधिकाधिक लोग इस सांस्कृतिक आयोजन का आनंद ले सकें। आयोजन स्थल पर उमड़ी भीड़ ने यह सिद्ध कर दिया कि राजस्थानी संस्कृति के प्रति लोगों का उत्साह निरंतर बढ़ रहा है।

पारंपरिक वेशभूषा में सजे कलाकारों एवं महिलाओं-युवाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने कार्यक्रम की भव्यता को और बढ़ा दिया। लोकगीतों की मधुर धुनों पर झूमते प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक विरासत की जीवंत झलक प्रस्तुत की। हर चेहरे पर उल्लास और अपनी परंपराओं के प्रति गर्व स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उल्लेखनीय है कि 'होली-टोली' विगत 32 वर्षों से निरंतर राजस्थानी संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य कर रही है। यह आयोजन केवल होली उत्सव तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक समन्वय और नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। गुवाहाटी जैसे बहुसांस्कृतिक शहर में इस प्रकार के आयोजन न केवल सांस्कृतिक विविधता को सशक्त करते हैं, बल्कि विभिन्न समुदायों के बीच सौहार्द और समरसता का भी संदेश देते हैं। 'होली-टोली' का यह भव्य आयोजन निश्चित रूप से इस वर्ष के सांस्कृतिक कैलेंडर की एक यादगार कड़ी बन गया है।

होली : रिश्तों की परीक्षा

उत्सव और जिम्मेदारी

आज होली कई बार उन्मुक्तता की आड़ में असंयम का रूप ले लेती है। जबरन रंग, अपशब्द, पानी की बर्बादी—क्या यही हमारी संस्कृति है?

उत्सव की असली पहचान संयम है।

आनंद तब ही सुंदर है, जब वह किसी और के सम्मान को ठेस न पहुंचाए।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

असम की धरती पर होली का स्वर अपेक्षाकृत शांत और सांस्कृतिक है। डोल उत्सव की परंपरा हमें बताती है कि भक्ति और उल्लास साथ-साथ चल सकते हैं।

यही संतुलन पूरे समाज के लिए आदर्श बन सकता है—जहां उत्सव भी हो और मर्यादा भी।

होली केवल रंग लगाने का दिन नहीं, बल्कि संबंधों की परीक्षा का दिन है।

क्या हम क्षमा कर सकते हैं?

क्या हम संवाद शुरू कर सकते हैं?

क्या हम अपने भीतर के अहंकार को जला सकते हैं?

यदि उत्तर हां है, तो यही सच्ची होली है।

यदि नहीं, तो रंग केवल चेहरे पर हैं, मन अब भी सूखा है।

रंगों से पहले मन को भिगोइए।

उत्सव से पहले स्वयं को बदलिए।

तभी होली पूर्ण होगी।

साप्ताहिक राशिफल

27 से 5 मार्च 2026 ।।विक्रम संवत 2082-मास : फाल्गुन, पक्ष : शुक्ल- एकादशी

मेष — **करियर** में नई शुरुआत के संकेत। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय। परिवार में किसी मांगलिक चर्चा की संभावना। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

वृषभ — **धन** आगमन के योग बन रहे हैं। रुके हुए कार्य पूरे होंगे। जमीन-जायदाद से जुड़े मामलों में सावधानी रखें।

मिथुन — **संपर्क** और संचार से लाभ मिलेगा। मीडिया, लेखन और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए अच्छा समय। खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क — **भावनात्मक** संतुलन बनाए रखें। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती हैं। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

सिंह — **नेतृत्व** क्षमता बढ़ेगी। नौकरी में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिल सकती है। दांपत्य जीवन मधुर रहेगा।

कन्या — **यात्रा** के योग बन सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिल सकती है।

तुला — **व्यापार** में लाभ। साझेदारी में काम करने वालों के लिए अच्छा समय। नए निवेश से पहले सोच-विचार करें।

वृश्चिक — **कार्यस्थल** पर दबाव रहेगा लेकिन परिणाम अनुकूल मिलेंगे। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

धनु — **धार्मिक** यात्रा या किसी आध्यात्मिक आयोजन में भाग लेने का अवसर। शिक्षा और शोध से जुड़े लोगों को लाभ।

मकर — **आर्थिक** स्थिति मजबूत होगी। परिवार में शुभ समाचार। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ — **सामाजिक** प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राजनीति और प्रशासन से जुड़े लोगों के लिए समय महत्वपूर्ण। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

मीन — **रचनात्मक** कार्यों में सफलता। कला और साहित्य क्षेत्र में पहचान बढ़ेगी। प्रेम संबंधों में मधुरता।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

27 फरवरी 2026 : जया एकादशी, **28 फरवरी 2026**:प्रदोष व्रत (शनि प्रदोष), **1 मार्च 2026** : मासिक शिवरात्रि, **3 मार्च 2026**- फाल्गुन पूर्णिमा / होलिका दहन, **4 मार्च 2026** : होली

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

होली पकवान

ठंडाई

सामग्री: 1 लीटर ठंडा दूध, 10-12 बादाम, 10 पिस्ता, 1 बड़ा चम्मच खरबूजे के बीज, 5-6 काली मिर्च, 4-5 इलायची, गुलाब की पंखुड़ियां, चीनी स्वादानुसार।

विधि : बादाम, पिस्ता, बीज और मसालों को भिगोकर पीस लें। दूध में यह पेस्ट मिलाएं और चीनी डालें। ठंडा करके गुलाब की पंखुड़ियों से सजाकर परोसें।

समर्थन के बदले चार मंत्री पद की मांग

नई मंत्रिपरिषद में सशक्त भागीदारी का दावा

जन जन विचार
...✍ ढेकियाजुली

आगामी असम विधानसभा चुनाव को लेकर बोड़ोलैंड क्षेत्र की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। बोड़ोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) ने संकेत दिया है कि यदि वह चुनाव के बाद भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को समर्थन देती है, तो नई मंत्रिपरिषद में उसे चार मंत्री पद दिए जाने चाहिए।

बोड़ोलैंड प्रादेशिक परिषद चुनाव में 28 सीटों पर विजय के बाद पार्टी का आत्मविश्वास बढ़ा है। बीपीएफ ने बोडोलैंड क्षेत्र की 15 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी तेज कर दी है और दावा किया है कि इन सीटों पर जीत दर्ज करने के बाद राज्य सरकार में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

चार मंत्री पद स्वाभाविक मांग

पार्टी के केंद्रीय संगठनात्मक सचिव अब्दुर रहीम ने कहा कि वर्तमान परिवहन मंत्री चंदन ब्रह्म (चरण बोड़ो) के अतिरिक्त तीन अन्य विधायकों को भी मंत्री बनाया जाना चाहिए। उनका कहना है कि यदि बोड़ोलैंड क्षेत्र की 15 सीटों पर पार्टी के प्रत्याशी विजयी होते हैं, तो मुख्यमंत्री हिमंत विश्वशर्मा की नई मंत्रिपरिषद में चार मंत्रियों की मांग स्वाभाविक और न्यायसंगत होगी।

बोड़ोलैंड की 15 सीटों पर नजर

उन्होंने यह वक्तव्य 19 फरवरी को पवित्र रमजान माह के प्रथम दिन इकराबाड़ी प्राथमिक विद्यालय की नई समिति के गठन कार्यक्रम एवं आयोजित इफ्तार समारोह के दौरान दिया।

राजनीतिक बयानबाजी तेज

इस अवसर पर अब्दुर रहीम ने यूपीपीएल के पार्षद राकेश ब्रह्म पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनावी समय में धार्मिक प्रतीकों का उपयोग कर दिखावटी राजनीति की जा रही है, जो उचित नहीं है। उन्होंने भविष्य में इस प्रकार की राजनीति से परहेज करने की चेतावनी भी दी।

निर्णायक हो सकती हैं 15 सीटें

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बोड़ोलैंड क्षेत्र की 15 विधानसभा सीटें असम के सत्ता संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यदि इन सीटों पर बीपीएफ प्रभावी प्रदर्शन करती है, तो चुनाव के बाद गठबंधन की राजनीति में उसकी भूमिका निर्णायक बन सकती है।

फिलहाल, सभी की निगाहें चुनाव परिणामों और उसके बाद बनने वाले समीकरणों पर टिकी हुई हैं। बोड़ोलैंड क्षेत्र से उठी यह मांग आगामी राजनीतिक परिदृश्य को नई दिशा दे सकती है।

रोहा में असम दर्शन योजना के तहत 150 नामघर-मंदिरों को 3-3 लाख की सहायता

▶▶4 मार्च को जौंगालबलहु पर्यटन स्थल का उद्घाटन

जन जन विचार
...✍ रोहा

असम सरकार की असम दर्शन योजना 2025-26 के अंतर्गत रोहा विधानसभा क्षेत्र के 150 नामघर और मंदिरों को 3-3 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। रोहा के विधायक शशिकांत दास ने अपने निवास स्थान पर आयोजित एक कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतों से आए नामघर एवं मंदिर संचालन समितियों के प्रतिनिधियों को चेक वितरित किए। इस अवसर पर विधायक ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में असम में तीव्र गति से विकास कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण और विकास के लिए सरकार की यह योजना महत्वपूर्ण साबित हो रही है।

जन आशीर्वाद यात्रा की तैयारी तेज

विधायक ने जानकारी दी कि आगामी 28 फरवरी से प्रारंभ होने वाली जन आशीर्वाद यात्रा 1 मार्च को रोहा पहुंचेगी। इसके लिए क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ता तैयारियों में जुटे हुए हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि 4 मार्च को मुख्यमंत्री रोहा के तिवा वीर जौंगालबलहु की स्मृति में लगभग 90 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित पर्यटन स्थल का उद्घाटन करेंगे। यह परियोजना क्षेत्र के पर्यटन विकास को नई दिशा देगी। कार्यक्रम में तिवा स्वायत्त परिषद के कार्यवाहक सदस्य सुरेज कोंवर, समाजकर्मी जनार्दन सैकिया, भाजपा कमारगांव मंडल अध्यक्ष भास्कर पातर सहित विभिन्न मंडलों के अध्यक्ष, सचिव, पार्टी कार्यकर्ता तथा नामघर-मंदिर संचालन समितियों के सैकड़ों प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

103 सीटों पर बढ़त का दावा

40 नए चेहरों को उतारना भाजपा की सुनियोजित रणनीति का हिस्सा है। एक ओर यह एंटी-इंकम्बेंसी की आशंका को संतुलित करने का प्रयास है, दूसरी ओर संगठन में युवा नेतृत्व को आगे लाने का संकेत भी।

पिछले कार्यकाल में भाजपा ने बुनियादी ढांचे, निवेश और कानून-व्यवस्था के मुद्दों को प्रमुखता दी है। अब पार्टी इन्हीं उपलब्धियों के आधार पर जनसमर्थन को दोहराने की तैयारी में है।

सहयोगियों से सीट बंटवारे पर अंतिम दौर

मुख्यमंत्री ने सहयोगी दलों के साथ चल रही बातचीत पर भी प्रकाश डाला।

असम गण परिषद) के साथ चर्चा जारी है

राभा ज्वाइंट फोरम के साथ वार्ता लगभग अंतिम चरण में है।

बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट से 28 फरवरी से पहले बातचीत संभावित है।

यह स्पष्ट है कि भाजपा गठबंधन को संतुलित रखते हुए अधिकतम सीटों पर प्रभावी दावेदारी चाहती है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बोहाग बिहू से पहले चुनाव की मांग

मुख्यमंत्री ने भारत निर्वाचन आयोग से अनुरोध किया है कि मतदान बोहाग बिहू से पहले कराया जाए। उनका तर्क है कि बिहू के बाद मानसून का मौसम शुरू हो जाता है, जिससे चुनाव कराना प्रशासनिक दृष्टि से कठिन होगा। साथ ही, सुरक्षा बलों को एक साथ बिहू उत्सव और चुनाव ड्यूटी में लगाना चुनौतीपूर्ण साबित हो सकता है। यह मांग राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

कांग्रेस पर निशाना : विपक्ष का दर्जा भी खतरे में

मुख्यमंत्री ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर सीधा हमला करते हुए कहा कि यदि कांग्रेस ने अल्पसंख्यक बहुल सीटें अपने सहयोगी दलों को दे दीं, तो उसे विपक्ष का दर्जा भी गंवाना पड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि 126 सदस्यीय विधानसभा में विपक्ष के नेता का पद पाने के लिए कम-से-कम 22 सीटें आवश्यक हैं। यदि **रायजोर दल को 4-5 सीटें,** असम जातीय परिषद को 1-2 सीटें, ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट को 2-3 सीटें मिलती हैं, तो कांग्रेस 22 के आंकड़े से नीचे रह सकती है।

चुनावी तस्वीर : केवल सत्ता नहीं, अस्तित्व की लड़ाई

असम का यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का प्रश्न नहीं है, बल्कि विपक्षी दलों के अस्तित्व और राजनीतिक प्रासंगिकता की भी परीक्षा है।

विपक्ष गठबंधन की जटिलताओं में उलझा नजर आ रहा है।

सीट बंटवारे की रणनीति ही अंतिम परिणाम को निर्णायक रूप से प्रभावित कर सकती है।

आने वाले दिनों में उम्मीदवारों की सूची और गठबंधन की अंतिम रूपरेखा चुनावी दिशा तय करेगी। बोहाग बिहू से पहले मतदान की संभावित घोषणा के साथ ही राज्य में आचार संहिता लागू होने की संभावना भी बढ़ गई है। अब असम की जनता की निगाह इस पर है कि राजनीतिक दावों के बीच रोजगार, बाढ़ नियंत्रण जैसे मूल मुद्दे कितनी प्रमुखता से चुनावी विमर्श में स्थान पाते हैं।

संपादकीय

भारत मंडपम में विरोध राजनीति या राष्ट्रहित ?

भारत मंडपम में आयोजित कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रभाव शिखर सम्मेलन के दौरान भारतीय युवा कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन ने देश की राजनीति को कठघरे में खड़ा कर दिया है। प्रश्न यह है कि क्या वैश्विक मंच पर राष्ट्र की प्रतिष्ठा से बड़ा कोई दलगत स्वार्थ हो सकता है ?

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जिसमें अस्सी से अधिक देशों की सहभागिता रही, किसी एक नेता या दल का आयोजन नहीं था, बल्कि भारत की साख का प्रतिनिधित्व कर रहा था। ऐसे अवसर पर विरोध का तरीका और स्थान दोनों ही गंभीर चिंता का विषय हैं। लोकतंत्र में असहमति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सबको प्राप्त है, किंतु यदि विरोध की शैली से राष्ट्र की छवि को आघात पहुंचे तो उसे वैचारिक मतभेद नहीं, बल्कि राजनीतिक अधैर्य कहा जाएगा।

विपक्ष का दायित्व केवल प्रतिरोध करना नहीं, बल्कि समय, मर्यादा और राष्ट्रीय हित की संवेदनशीलता को समझना भी है। विदेशी प्रतिनिधियों की उपस्थिति में इस प्रकार का प्रदर्शन यह संदेश देता है कि आंतरिक राजनीति, राष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर भारी पड़ रही है। यदि सुरक्षा व्यवस्था में त्रुटि हुई है तो उसकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है, और यदि यह पूर्वनियोजित था तो उत्तरदायित्व भी निश्चित होना चाहिए।

लोकतंत्र में मतभेद स्वाभाविक हैं, परंतु राष्ट्रहित सर्वोपरि है। सत्ता की प्रतिस्पर्धा में यदि देश की गरिमा दांव पर लगे, तो यह स्वस्थ राजनीति नहीं, बल्कि चिंताजनक प्रवृत्ति है।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

मुफ्त रेवड़ी संस्कृति

भारत में चुनावी मौसम आते ही मुफ्त बिजली, नकद सहायता और यात्रा जैसी घोषणाओं की बाढ़ आ जाती है। सवाल यह है कि राजस्व घाटे से जूझ रहे राज्यों के पास इन योजनाओं के लिए संसाधन कहां से आएंगे ? जो धन बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सृजन में लगना चाहिए, वह तात्कालिक राजनीतिक लाभ में खर्च हो जाता है।

निस्संदेह, आपदा या सामाजिक सुरक्षा के तहत सहायता देना राज्य का कर्तव्य है। लेकिन यदि योजनाएं मतदाता को निर्भर बनाने का माध्यम बन जाएं, तो यह लोकतांत्रिक परिपक्वता पर प्रश्नचिह्न है।

भारत निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी है कि चुनावी निष्पक्षता सुनिश्चित करे। लोकतंत्र केवल वोट डालने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिकता का नाम है। मतदाता यदि दीर्घकालिक विकास को प्राथमिकता देंगे, तभी लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी।

रास चुनाव 2026 : सियासत की नई बिसात

जन जन विचार
...✍ कमलेश पांडेय

चिरंजीवी सदन 'राज्यस' के द्विवार्षिक चुनाव के लिए वर्ष 2026 में विभिन्न चरणों में खाली होने वाली कुल 71-75 सीटों के लिए चुनाव होंगे, जो पूरे वर्ष अप्रैल और नवंबर में भरी जाएंगी। लिहाजा, इन चुनावों के राजनीतिक मायने गहन व अहम हैं, क्योंकि ये चुनाव जहां एनडीए की बहुमत मजबूती बढ़ा सकते हैं, वहीं विपक्ष को भी कमजोर कर सकते हैं। इससे भाजपा व उसके साथियों का चुनावी हौसला बढ़ेगा

चुनाव आयोग ने पहले चरण में 10 राज्यों की 37 सीटों पर चुनाव घोषित किए हैं। जिसके लिए नामांकन 5 मार्च तक, और मतदान-मतगणना 16 मार्च 2026 को। जबकि बाकी सीटें नवंबर में भरी जाएंगी, जिसमें उत्तर प्रदेश की 10 सीटें सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन दस चुनावी राज्यों में से 6 राज्यों में एनडीए की सरकार है, जबकि 4 राज्यों में इंडी गठबंधन के घटक दल सरकार में हैं। जहां तक राज्यवार सीटों की बात है कि पहले चरण में महाराष्ट्र की 7, तमिलनाडु की 6, पश्चिम बंगाल की 5, बिहार की 5, ओडिशा की 4, असम की 3, हरियाणा की 2 और छत्तीसग? की 1 सीटें शामिल हैं, जबकि दूसरे चरण में उत्तरप्रदेश की 10 और झारखंड, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना आदि की 20 से अधिक सीटों के लिए नवम्बर में चुनाव होंगे।

जहां तक उच्च सदन राज्यसभा में वर्तमान दलगत स्थिति की बात है तो राज्यसभा में कुल 245 सीटें हैं, जहां भाजपा के 103 और एनडीए के 121-129 सांसद हैं। जबकि विपक्षी इंडिया (INDIA) ब्लॉक के पास 78-80 सीटें हैं, जिसमें कांग्रेस के 27 सांसद हैं। जहां तक इन चुनावों के राजनीतिक प्रभाव की बात है तो इन चुनावों में एनडीए को 7-9 या इससे अधिक सीटों का लाभ मिलने का अनुमान है, जिससे उनकी संख्या 145 तक पहुंच सकती है। जबकि विपक्ष को 5 सीटें खोने का खतरा, खासकर बिहार, महाराष्ट्र में है। इससे भाजपा को राज्यसभा में अब कोई भी विधेयक पास करना आसान होगा और सुपरमेजॉरिटी की ओर बढ़त भी उसे मिलेगी।

सवाल है कि इन चुनावों में एनडीए को कितनी सीटें मिलने की संभावना है तो राजनीतिक विश्लेषकों को अनुमान है कि एनडीए को 2026 के राज्यसभा चुनावों में कुल 48 या इससे अधिक सीटें मिलने की संभावना है, जिससे उनकी ताकत 129 से बढ़कर 140+ हो सकती है। पहले चरण के 37 सीटों पर 5-7 का लाभ अनुमानित है, जबकि उत्तर प्रदेश जैसे बाद के चरणों से भी उसे अतिरिक्त मजबूती मिलेगी। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, 71-75 खाली सीटों में से एनडीए को नेट 7-9 या 48 सीटें हासिल हो सकती हैं। चूंकि वर्तमान में एनडीए के 121-129 सदस्य हैं, इसलिए चुनाव बाद 145 तक पहुंचने की उम्मीद है। वहीं बाद के जून-नवम्बर वाले दूसरे चरणों के प्रभाव की बात है तो वे भी स्पष्ट है। उत्तर प्रदेश की 10 सीटों में भाजपा को 7-8 मिलनी संभावित है, जबकि ओडिशा, तेलंगाना आदि में स्थिरतामिलेगी।, कुल मिलाकर सुपरमेजॉरिटी (123+) पक्की होगी। जबकि विपक्ष को 5 नुकसान होगा।

जहां तक इन चुनावों में इंडिया गठबंधन को कितनी सीटें मिलने की बात हैं तो इंडिया गठबंधन को 2026 के राज्यसभा चुनावों में कुल 71-75 सीटों में से नेट 5 का नुकसान हो सकता है, जिससे उनकी संख्या 80 से घटकर 75 रह जाएगी। पहले चरण के 37 सीटों पर भी नुकसान की स्थिति बनी हुई है, हालांकि कुछ राज्यों में स्थिरता संभव है। विश्लेषकों के अनुसार, इंडिया ब्लॉक वर्तमान 80 सीटों से 75 पर सिमट सकता है। कांग्रेस को विशेष रूप से 8 सीटें खोने का खतरा, जिसमें मल्लिकार्जुन खरगे, दिग्विजय सिंह की सीटें भी शामिल हैं। वहीं बाद के चरणों का प्रभाव भी उसपर पड़ेगा। क्योंकि उत्तर प्रदेश की 10 सीटें में से सपा को 2-3 मिलनी संभावित हैं, लेकिन कुल नुकसान होगा। जबकि कर्नाटक, झारखंड में 1-1 सीटों का नुकसान संभव है। ओवरऑल, एनडीए के लाभ से इंडिया कमजोर होगा।

जहां तक राज्यवार स्थिति की बात है तो बिहार में राज्यसभा की 5 सीटों के लिए चुनाव होगा। अभी आरजेडी के 2, जेडीयू के 2 और एक सांसद राष्ट्रीय लोक मोर्चा का है। बिहार में 243 सदस्यीय विधानसभा में एक सीट पर जीत के लिए 41 विधायकों के समर्थन की जरूरत है। एनडीए के पास 202 विधायक हैं और एनडीए के खाते में 4 सीटें सुनिश्चित हैं, जबकि 5 के लिए जोर आजमाइश बढ़ेगी। क्योंकि यहां 35 सीटों के साथ I.N.D.I.A. एक भी सीट अपने बल पर जीतने की स्थिति में नहीं है, ऐसे में 5 विधायकों वाले AIMIM की भूमिका अहम हो जाती है। यदि पूरा विपक्ष एकजुट होता है तो बिहार में विपक्ष के पास कुल 41 विधायक हो जाते हैं और विपक्ष एक सीट निकाल सकते हैं। ऐसे में यह चुनाव तेजस्वी यादव के नेतृत्व और विपक्षी एकता की के लिए अग्निपरीक्षा होगा।

वहीं महाराष्ट्र विधानसभा में भाजपा के नेतृत्व में सत्तारूढ़ महायुति आसानी से 6 सीटों पर जीत हासिल कर लेगा, वहीं 7वीं सीट के लिए वोटिंग हो सकती है। इसलिए महाराष्ट्र की राजनीतिक के चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार का संसदीय सफर थम सकता है। जबकि हरियाणा से बीजेपी के दो सदस्य किरण चौधरी और रामचंद्र जांगरा का कार्यकाल 9 अप्रैल को खत्म हो रहा है। इसी प्रकार ओडिशा की 4 सीटों पर चुनाव होंगे, जहां अभी 2 सीट बीजेपी और 2 बीजेडी के पास है लेकिन विधानसभा चुनाव के नतीजों को देखें तो बीजेपी की सीटों में इजाफा होना तय है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में दोनों सीटें अभी कांग्रेस के पास हैं और यहां भी बीजेपी जीत दर्ज करने की स्थिति में है। रही बात तेलंगाना की तो वहां से कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी रिटायर हो रहे हैं और बीआरएस के एक कैंडिडेट का कार्यकाल पूरा हो रहा है। तेलंगाना में कांग्रेस दोनों सीटें जीत सकती है और हिमाचल में भी कांग्रेस एक सीट जीत सकती है। असम से तीन पश्चिम बंगाल से 5 और तमिलनाडु से भी 6 राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव होंगे। चूंकि इन तीनों राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं लेकिन विधानसभा चुनाव से पहले इन राज्यों में सत्तारूढ़ पार्टियों के पास राज्यसभा में अपना संख्याबल कायम रखने का मौका मिलेगा।

यही वजह है कि क्रॉस वोटिंग से निपटने की चुनौती विपक्ष के सामने रहेगी। क्योंकि राज्यसभा चुनाव में राजनीतिक पार्टियों के लिए अपने अपने विधायको को एकजुट रखने की चुनौती हमेशा होती है। पिछले कुछ राज्यसभा चुनावों को देखें तो हरियाणा में कांग्रेस को क्रॉस वोटिंग का सामना करना पड़ा था। इसलिए आने वाले राज्यसभा चुनावों को देखें तो चाहे हरियाणा हो, बिहार हो, यहां पर कांग्रेस और सहयोगी दलों को फूंक-फूंक करकदम रखना होगा। हालांकि कुछ सीटों पर तो रिजल्ट पहले से ही तय है, लेकिन अगर विपक्ष क्रॉस वोटिंग को रोक पाता है तो उसके हाथ भी कुछ सीट आ सकतीहैं। चूंकि राज्यसभा में बीजेपी और एनडीए का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है, इसलिए इस वर्ष 75 सीटों पर होने वाले चुनावों में विपक्ष यदि कारगर रणनीति नहीं बनाता है तो फिर इंडिया गठबंधन वाले कांग्रेस और उसके सहयोगियों की संख्या और घट सकती है, इतना तय है। जहां तक इन चुनावों में प्रमुख नेताओं के प्रभावित होने की बात है तो कई दिग्गजों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है जिसमें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के शरद पवार, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, जदयू नेता हरिवंश, भाजपा के केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी (6 मंत्री सहित) शामिल हैं। वहीं बीएसपी राज्यसभा से साफ हो सकती है। क्योंकि उत्तर प्रदेश में भाजपा को 7, सपा को 2 सीटें मिलने की संभावना है। वहीं राजद (RJD) और बीजद (BJD) समेत कई दलों की सीटें घटेंगी।

बिहार सरकार में बड़ा हेरफेर

नियंत्रक महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट ने दी बड़ी जानकारी

जन जन विचार
...✍ पटना:

बिहार विधानसभा में वित्त विभाग के मंत्री विजेंद्र यादव ने सीएजी की रिपोर्ट पेश की। उन्होंने गुरुवार को नियंत्रक महालेखापरीक्षक (सीएजी) से प्राप्त लेखापरीक्षा को सदन के पटल पर रखा। इसमें जिला परिवहन कार्यालयों की प्रगति की रिपोर्ट समेत अन्य कई रिपोर्ट शामिल हैं। CAG की रिपोर्ट पढ़ने के बाद सबलोग हैरान थे। इसमें कुछ ऐसी गड़बड़ी और घपले सामने आए जिसने विपक्ष को नीतीश सरकार को घेरने का बड़ा मौका दे दिया। आज भी विधानसभा में विपक्ष के विधायकों ने इस मामले पर जमकर प्रदर्शन किया। सीएजी की रिपोर्ट में यह बताया गया कि परिवहन विभाग में बड़ी गड़बड़ी हुई है। यह मामला चूंकि इनपुट टैक्स क्रेडिट से जुड़ा है इसलिए पहले जानते हैं इनपुट टैक्स घोटाला क्या होता है। चाणक्य इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटिकल राइट्स एंड रिसर्च के अध्यक्ष और वरिष्ठ पत्रकार सुनील कुमार सिन्हा बताते हैं कि यह सीधे पर जीएसटी से जुड़ा मामला है। जब कोई व्यवसायी सामान बेचता है और वह ग्राहक से जो टैक्स वसूलता है तो आउटपुट टैक्स कहते हैं। इस इस आउटपुट टैक्स में से वह अपनी खरीदारी पर पहले दिए गए टैक्स यानी इनपुट टैक्स को घटा देता है। बाकी जो राशि बचती है वह सरकार को देनी होती है। अब जानिए इससे जुड़ा क्या घोटाला है...

इनपुट टैक्स क्रेडिट में क्या गड़बड़ी हुई ?

वरिष्ठ पत्रकार सुनील कुमार सिन्हा बताते हैं कि सीएजी की रिपोर्ट में बताया गया कि इनपुट टैक्स क्रेडिट पर काबू पाने में सरकार विफल रही। 12 अंचलों की जांच में टैक्स देने वाले 22 करदाताओं ने 1167.89 करोड़ रुपये का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले लिया। जांच में यह बता चला कि इन 22 करदाताओं को 914 करोड़ 51 लाख रुपये ही मिलनी चाहिए थी। रिपोर्ट में यह बताया गया कि पटना सिटी एक ट्रांसफोर्टर ने बाइक से दो करोड़ 32 लाख रुपये की माल ढुलाई कर ली। इसके आधार पर 19 लाख 32 हजार रुपये इनपुट टैक्स क्रेडिट दूसरे को ट्रांसफर कर दिया गया। इतना ही नहीं यह ढुलाई के लिए जो वाहन उपयोग में दिखाए गए, वह चोरी और स्क्रैप में जा चुके थे। ऐसी नौ गाड़ियों को माल परिवहन में दिखाया गया। यह बड़ी गड़बड़ी है।

डोभी और बलथरी चेकपोस्ट गड़बड़ी का क्या मामला है ?

सीएजी की रिपोर्ट में बताया गया कि गया जिले के डोभी और गोपालगंज जिले के बलथरी चेकपोस्ट पर बिना जुर्माना लिए ही वाहनों को छोड़ दिया गया। इतना ही नहीं कुछ ऐसे ही भी जांच करते पाए गए जिनके पास ऐसा करने का अधिकार ही नहीं था। पुल पर बिना जांच किए ही वाहन चालकों को पास किया जा रहा था। इतना ही नहीं इन दोनों चेक पोस्ट पर गलत कागजात वाले वाहन चालकों को भी छोड़ दिया गया।

होली से पहले पटना में बर्ड फ्लू की इंट्री

6000 मुर्गियां दफन जू में भी हाई अलर्ट

पटना: होली का रंग चढ़ने ही वाला है, लेकिन इस बार मुर्गा पार्टी पर ब्रेक लग गया है। बिहार में बर्ड फ्लू का खतरा मंडरा रहा है और पटना में मुर्गियों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। चितकोहरा के कौशल नगर स्थित बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पोल्ट्री अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में 6000 मुर्गियां संक्रमित पाई गईं। डेयरी, मत्स्य एवं पशु संसाधन विभाग ने सभी मुर्गियों को दफना दिया है। इलाके को पूरी तरह सेनिटाइज कर एहतियात बरतने की अपील की गई है।

होली की दावत पर 'रेड अलर्ट', इंफेक्शन जोन घोषित

संक्रमित क्षेत्र के एक किलोमीटर दायरे को इंफेक्शन जोन घोषित किया गया है। साथ ही 9 किलोमीटर तक के इलाके को सर्विलांस एरिया बनाया गया है। यहां अंडा, मुर्गी और चारे के प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। पटना डीएम के आदेश पर नगर निगम क्षेत्र में मुर्गा-मुर्गी के आवागमन पर भी प्रतिबंध है। कौशल नगर में चेक पोस्ट बनाया गया है। शास्त्रीनगर और बाइपास थाना पुलिस निगरानी में जुटी है।

बिना मास्क नो एंट्री, फार्म पर सख्ती

मुर्गी फार्म क्षेत्र में बिना मास्क प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। यह इलाका एयरपोर्ट के पास चितकोहरा पुल के नीचे स्थित है। घनी आबादी के कारण प्रशासन अतिरिक्त सतर्कता बरत रहा है। सेनिटाइजेशन प्रमाणपत्र मिलने के बाद ही सामग्री के उपयोग की अनुमति होगी। जिला प्रशासन ने दो महीने तक मुर्गा-मुर्गी पालन पर रोक लगा दी है। लोगों से घबराने नहीं, बल्कि सावधानी रखने की अपील की गई है।

पूर्वोत्तर को पाठ्यपुस्तकों में मिले सम्मानजनक स्थान

नस्लीय भेदभाव की घटना के बाद अरुणाचल विधायक का केंद्र से सीधा सवाल

नई दिल्ली/ईटानगर। राजधानी दिल्ली के मालवीय नगर में अरुणाचल प्रदेश की तीन महिलाओं के साथ कथित नस्लीय दुर्व्यवहार की घटना ने एक बार फिर देश में पूर्वोत्तर के प्रति संवेदनशीलता के प्रश्न को राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है।

नबाम विवेक ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए केंद्र सरकार से मांग की है कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों के इतिहास, संस्कृति और सामाजिक संरचना पर समर्पित एवं विस्तृत अध्याय शामिल किए जाएं।

उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के लोग देश के अन्य राज्यों की भौगोलिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों से परिचित हैं, लेकिन मुख्यभूमि भारत का बड़ा वर्ग अब भी पूर्वोत्तर की विरासत से अनभिज्ञ है। यह असंतुलन ही भेदभाव की जड़ है।

शिक्षा से ही मिटेगी दूरी

विधायक का तर्क है कि यदि बचपन से ही विद्यार्थियों को आठों पूर्वोत्तर राज्यों— असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम — की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, भाषाई विरासत और ऐतिहासिक योगदान से परिचित कराया जाए, तो पारस्परिक सम्मान और राष्ट्रीय एकता स्वत: सुदृढ़ होगी।

उनका स्पष्ट मत है कि पाठ्यपुस्तकों में संतुलित प्रतिनिधित्व नस्लीय पूर्वाग्रह को जड़ से समाप्त करने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

मुख्यमंत्री की कड़ी प्रतिक्रिया

पेमा खांडू ने भी घटना की निंदा करते हुए बताया कि उन्होंने स्वयं दिल्ली पुलिस आयुक्त से बात कर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

कांग्रेस-राइजर दल वार्ता में दरार के संकेत

के भीतर गंभीर समीक्षा चल रही है।

गठबंधन को लेकर सकारात्मक, पर स्थिति पहले जैसी नहीं

गौरव गोगोई ने कहा कि उन्होंने बातचीत की विस्तृत रिपोर्ट पार्टी नेतृत्व को भेज दी है — जिसमें पूर्ण हुई वार्ताएं और आधे रास्ते पर अटकी चर्चाएं शामिल हैं। लोग सब समझते हैं। मैं गठबंधन को लेकर अब भी सकारात्मक हूं, लेकिन स्थिति पहले जैसी नहीं है। यह बयान विपक्षी एकता की नाजुक स्थिति को उजागर करता है। हालांकि उन्होंने गठबंधन टूटने की घोषणा नहीं की, लेकिन यह स्पष्ट कर दिया कि अंतिम निर्णय कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व ही करेगा।

एजेपी को 9 सीटें लगभग तय

जहांराइजर दल के साथ बातचीत में अनिश्चितता है, वहीं कांग्रेस ने असम जातीय परिषद के साथ प्रगति की है। सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस ने एजेपी के लिए नौ विधानसभा सीटों— खोवांग, बरहमपुर, बिन्नाकांडी, बजाली, डिब्रूगढ़, सरूपथार, गुवाहाटी सेंट्रल, सादिया और पलाशबाड़ी — पर सहमति बना ली है।

अब नजर इस बात पर है कि क्या राइजर दल के साथ भी ऐसी ही स्पष्टता सामने आती है।

मुख्यमंत्री का हस्तक्षेप : कांग्रेस के लिए शून्य-योग गणित ?

इस बीच हिमंत विश्वशर्मा ने विपक्षी मतभेदों पर टिप्पणी करते हुए कांग्रेस को चेतावनी दी कि अल्पसंख्यक बहुल सीटें छोटे सहयोगी दलों को सौंपना उसके लिए राजनीतिक रूप से नुकसानदेह हो सकता है। उन्होंने कहा कि 126 सदस्यीय विधानसभा में विपक्ष के नेता का पद पाने के लिए कम-से-कम 22 सीटें जरूरी हैं। यदि राइजर दल 4-5 सीटें, एजेपी 1 सीट, और ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट 2-3 सीटें जीतती है, तो कांग्रेस 22 के आंकड़े से नीचे रह सकती है। मुख्यमंत्री ने इसे संख्या का गणित बताते हुए कहा कि यह रणनीति कांग्रेस की संस्थागत स्थिति को कमजोर कर सकती है।

विपक्षी मोर्चा : एकता या अंतर्विरोध ?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विपक्षी गठबंधन के भीतर तीन प्रमुख चुनौतियां हैं

सीटों का संतुलन - कौन कितनी सीटें लड़े ?

पूर्व नेताओं की वापसी ङ्क क्या निष्कासित कांग्रेसी नेताओं को सहयोगी दलों से टिकट मिलना स्वीकार्य होगा ?

विपक्ष के नेता का पद- क्या कांग्रेस अपनी केंद्रीय भूमिका बरकरार रख पाएगी ?

साहस का दूसरा नाम चंद्रशेखर आजाद

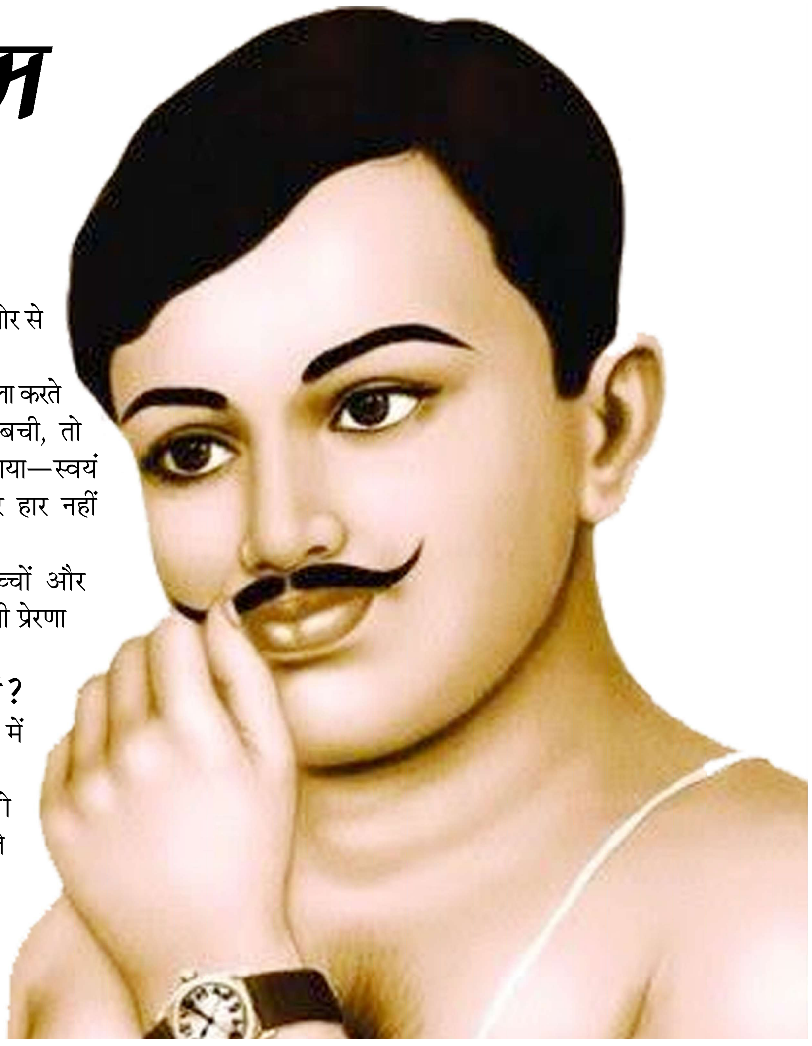

बचपन से ही अलग थे 'आजाद'

27 फरवरी 1906 को मध्य प्रदेश के भाबरा गाँव में एक बालक का जन्म हुआ—नाम रखा गया चंद्रशेखर तिवारी।

वे बचपन से ही फुर्तीले, जिद्दी और निडर थे। उन्हें तीर-कमान चलाना, पेड़ों पर चढ़ना और निशाना लगाना बहुत पसंद था।

जब वे पढ़ाई के लिए बनारस गए, तभी देश में आज़ादी की लहर तेज हो रही थी। छोटे से चंद्रशेखर के मन में भी देशभक्ति की ज्वाला जल उठी।

मेरा नाम आज़ाद है!

एक बार स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने पर अंग्रेज पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

अदालत में जज ने पूछा—
नाम?
बालक ने गर्व से कहा—'आजाद!'
पिता का नाम? — 'स्वाधीनता!'
घर — 'जेलखाना!'

उनकी निडरता देखकर सब दंग रह गए। उसी दिन से वे पूरे देश में चंद्रशेखर आजाद कहलाने लगे।

अटल संकल्प

आजाद ने प्रण लिया था—
'मैं कभी भी अंग्रेजों के हाथ जीवित नहीं पकड़ा जाऊँगा।'

वे अपने साथियों के साथ मिलकर देश की आज़ादी के लिए संघर्ष करते रहे। वे अनुशासनप्रिय थे, साथियों का ध्यान रखते थे और हमेशा हिम्मत बढ़ाते थे।

27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया।

घंटों तक वे अकेले मुकाबला करते रहे। जब अंतिम गोली बची, तो उन्होंने अपना वचन निभाया—स्वयं को गोली मार ली, पर हार नहीं मानी।

उनकी यह शहादत बच्चों और युवाओं के लिए आज भी प्रेरणा है।

क्या आप जानते हैं?

आजाद को निशानेबाजी में महारत थी।

वे अपने साथियों को परिवार की तरह मानते थे।

जिस पार्क में उन्होंने बलिदान दिया, आज वह आजाद पार्क के नाम से जाना जाता है।

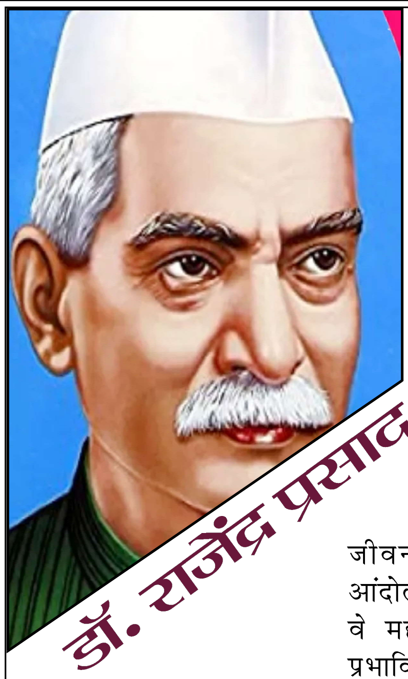

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

सादगी और सेवा के प्रतीक

एक साधारण परिवार से असाधारण व्यक्तित्व

डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के जीरादेई गांव में हुआ। बचपन से ही वे बहुत मेधावी और अनुशासित थे। कहा जाता है कि वे पढ़ाई में इतने तेज थे कि परीक्षा में परीक्षक ने उनकी उत्तर-पुस्तिका पर लिख दिया—
'परीक्षार्थी परीक्षक से बेहतर है।'

वे हमेशा समय का पालन करते, बड़ों का सम्मान करते और सादगी से जीवन जीते थे।

पढ़ाई में अव्वल, देशसेवा में अग्रणी

राजेंद्र बाबू ने कानून की पढ़ाई की और सफल वकील बने।

लेकिन जब देश को उनकी जरूरत पड़ी, तो उन्होंने आरामदायक जीवन छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

वे महात्मा गांधी से बहुत प्रभावित थे और उनके साथ मिलकर कई आंदोलनों में शामिल हुए।

असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति

26 जनवरी 1950 को जब भारत गणतंत्र बना, तो डॉ. राजेंद्र प्रसाद हमारे देश के पहले राष्ट्रपति बने।

उन्होंने लगभग 12 वर्षों तक इस पद को बड़ी ईमानदारी और सादगी से निभाया।

राष्ट्रपति बनने के बाद भी उनका जीवन बहुत सरल था। वे कहते थे—
'ऊँचा पद मिलने पर भी मन विनम्र रहना चाहिए।'

भक्त प्रह्लाद की कथा

बहुत समय पहले एक असुर राजा था — हिरण्यकश्यप
वह बहुत शक्तिशाली था और चाहता था कि सभी लोग उसी की पूजा करें।

लेकिन उसका अपना बेटा प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। यही बात हिरण्यकश्यपु को बिल्कुल पसंद नहीं थी।

पिता का अहंकार, बेटे की भक्ति

हिरण्यकश्यपु ने प्रह्लाद को कई बार समझाया—
'मेरी पूजा करो!'
पर छोटे से प्रह्लाद ने निडर होकर कहा —
'पिताश्री, मैं तो केवल भगवान विष्णु की ही पूजा करूँगा।'

राजा क्रोधित हो गया। उसने प्रह्लाद को डराने और सजा देने की ठानी।

हाथी, साँप और पहाड़

राजा ने प्रह्लाद को
ऊँचे पहाड़ से गिरवाया,
विषैले साँपों के बीच डलवाया,
हाथियों से कुचलवाने की कोशिश की।

लेकिन हर बार भगवान विष्णु ने अपने भक्त की रक्षा की।

प्रह्लाद का विश्वास अडिग रहा।

हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका को वरदान था कि वह अग्नि में नहीं जलेगी।

राजा ने योजना बनाई — होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठेगी।

अग्नि जलाई गई।
पर हुआ उल्टा!
होलिका जल गई और भक्त प्रह्लाद सुरक्षित बाहर आ गए।

तभी से होलिका दहन की परंपरा शुरू हुई, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

भगवान का अद्भुत रूप

एक दिन क्रोधित होकर हिरण्यकश्यपु ने पूछा —
'तुम्हारा भगवान कहाँ है?'
प्रह्लाद ने कहा —
'वह हर जगह हैं।'
राजा ने स्तंभ पर प्रहार किया।

तभी स्तंभ से भगवान विष्णु नरसिंह अवतार (आधा मानव, आधा सिंह) में प्रकट हुए और हिरण्यकश्यपु का अंत कर दिया।

इस प्रकार अहंकार की हार और भक्ति की जीत हुई।

सीख

कठिन परिस्थिति में भी विश्वास नहीं खोना चाहिए।

पुराणों की दृष्टि में होली : धर्म, भक्ति और लोकमंगल

जन जन विचार

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद (हरियाणा)

होली पर्व का धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक आधार भारतीय पुराण साहित्य में विविध रूपों में विद्यमान है। विशेष रूप से भागवत पुराण में भक्त प्रहलाद, हिरण्यकशिपु और भगवान के नृसिंह अवतार की विस्तृत कथा मिलती है, जिसे होलिका-दहन की मूल पृष्ठभूमि माना जाता है। इसी प्रकार विष्णु पुराण में भी प्रहलाद की अटूट भक्ति तथा नृसिंह अवतार का वर्णन प्राप्त होता है, जो होली के धार्मिक आधार को पुष्ट करता है। नारद पुराण में फाल्गुन पूर्णिमा के व्रत, स्नान और दान की महिमा का उल्लेख है, जिसे होली पर्व की आध्यात्मिक परंपरा से जोड़ा जाता है। पद्म पुराण में फाल्गुन पूर्णिमा के पुण्यफल और विविध धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है, जो इस उत्सव के महत्व को रेखांकित करता है। भविष्य पुराण में होलिका-दहन और फाल्गुन उत्सव का अपेक्षाकृत स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है, इसलिए अनेक विद्वान होली के प्रत्यक्ष वर्णन का स्रोत इसे मानते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्ण और राधा की वसंतकालीन लीलाओं तथा रंगोत्सव के प्रसंगों का वर्णन है, जो ब्रज की होली परंपरा से संबद्ध हैं। हरिवंश पुराण में कृष्ण जन्म और ब्रज-लीलाओं के संदर्भ में उत्सव एवं रंग-विलास का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त शिव पुराण में कामदेव-दहन का प्रसंग फाल्गुन मास से संबंधित है, जिसे अनेक परंपराओं में होली से जोड़ा जाता है। इस प्रकार इन पुराणों में वर्णित प्रसंगों के आधार पर होली का पौराणिक स्वरूप विविध आयामों में परिलक्षित है – भारतीय संस्कृति में उत्सव केवल सामाजिक उल्लास के अवसर नहीं, बल्कि वे आध्यात्मिक चेतना, लोकमानस और धर्मपरायण जीवन-दृष्टि के द्योतक भी हैं। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला होली का पर्व इसी परंपरा का उज्ज्वल उदाहरण है। पुराणों में इस पर्व का उल्लेख विविध प्रसंगों में मिलता है, जहाँ इसे अधर्म पर धर्म की विजय, अहंकार के दहन, भक्ति की महिमा और लोकमंगल की कामना से जोड़ा गया है। होली का मूल स्वर धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक है, जिसका आधार पौराणिक आख्यानों में निहित वर्णित है। होली के महत्त्व की चर्चा करते समय सर्वप्रथम स्मरण होता है भागवत पुराण में वर्णित भक्त प्रहलाद की कथा , हिरण्यकशिपु का अत्याचार, उसकी ईश्वर-विरोधी वृत्ति और प्रहलाद की अटूट विष्णु-भक्ति इस प्रसंग के केंद्र में है। प्रहलाद के मुख से निकला यह भाव पुराणों में बार-बार प्रतिध्वनित होता है-

'नैषा परावरा मतिर्भवतो ननु स्यात
निश्शेषितेन्द्रियगणो यदनु
स्मरन्ति।'

अर्थात् जिनका मन पूर्णतः भगवान में स्थित है, वे इन्द्रियों के वश में नहीं होते। हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन होलिका को आदेश दिया कि वह अग्नि में बैठकर प्रहलाद को भस्म कर दे। किंतु ईश्वर-भक्ति के प्रभाव से प्रहलाद सुरक्षित रहे और होलिका दग्ध हो गई। इस घटना का प्रतीकात्मक रूप ही होलिका-दहन है। पुराणों में यह

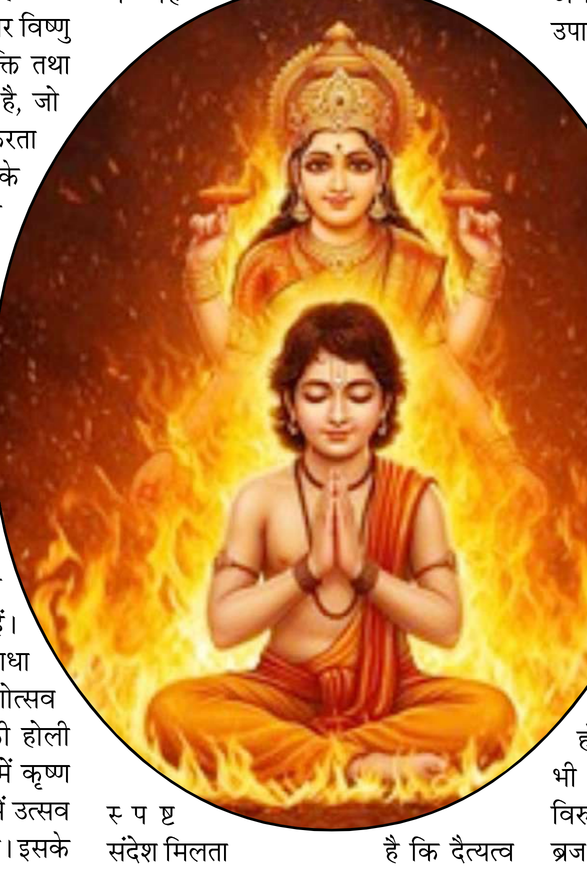

स्पष्ट संदेश मिलता है कि दैत्यत्व का अंत निश्चित है और भक्ति की विजय अवश्यंभावी है। विष्णु पुराण में भी प्रहलाद की भक्ति और विष्णु के नृसिंह अवतार का उल्लेख है-

' ॐस त्वं नृसिंह रूपेण दैत्येन्द्रं
निहतं प्रभो।'

यहाँ नृसिंह अवतार धर्म-संरक्षण का प्रतीक है। होली के अवसर पर जलती अग्नि केवल होलिका के दहन का स्मरण नहीं कराती, बल्कि वह मानव के भीतर के अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या और दुराचार के दहन का भी संकेत देती है। पुराणों में अग्नि को शुद्धि का प्रतीक माना गया है-

'ॐ अग्निर्हि देवतानां मुखम्।'

अर्थात् अग्नि देवताओं का मुख है। अतः होलिका-दहन में अग्नि के माध्यम से हम अपनी अशुद्ध प्रवृत्तियों को अर्पित करते हैं। होली का संबंध केवल प्रहलाद कथा से ही नहीं, बल्कि वसंतोत्सव और कामदेव प्रसंग से भी जुड़ा है। शिव पुराण में वर्णित है कि जब देवताओं ने भगवान शिव को तपस्या से जागृत करने के लिए कामदेव को प्रेरित किया, तब शिव के क्रोध से कामदेव भस्म हो गए-

'ततो दग्धः स्मरः क्रुद्धेन त्रिनेत्रेण
शम्भुना।'

यह प्रसंग फाल्गुन मास में घटित माना जाता है। बाद में रति के विलाप पर शिव ने कामदेव को अनंग रूप में पुनर्जीवन दिया। इस प्रकार होली का संबंध काम और संयम, दोनों के संतुलन से है। यह जीवन के उल्लास और मर्यादा के सामंजस्य का प्रतीक है।

पद्म पुराण में फाल्गुन पूर्णिमा का विशेष महत्व बताया गया है-

'फाल्गुने पूर्णिमायां तु स्नानदानादिकं शुभम्
अक्षयं फलमाप्नोति भक्त्या यः कुरुते नरः॥'

अर्थात् फाल्गुन पूर्णिमा को स्नान, दान और उपासना करने से अक्षय फल प्राप्त होता है। यह तिथि पाप-क्षालन और पुण्य-वृद्धि की मानी गई है। अतः होली केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि धार्मिक कृत्यों का भी अवसर है।

नारद पुराण में वर्णित है कि इस दिन विष्णु-पूजन और भजन-कीर्तन करने से विशेष फल मिलता है। प्रहलाद की कथा स्वयं इस बात का प्रमाण है कि बालक भी यदि निष्कपट भाव से भगवान का स्मरण करे तो वह ईश्वर की कृपा का अधिकारी बनता है।

यत्र धर्मो ह्यधर्मेण
सत्यं यत्रानृतेन च।
हन्यते प्रेक्षमाणानां
हतास्तत्र सभासदः॥

यह श्लोक अधर्म के विरोध में खड़े होने की प्रेरणा देता है। होली का संदेश भी यही है कि अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सत्य और धर्म की रक्षा आवश्यक है। ब्रज क्षेत्र में होली का विशेष महत्व है, जिसका आधार ब्रह्मवैवर्त पुराण और हरिवंश पुराण में वर्णित श्रीकृष्ण की लीलाओं में मिलता है। बालकृष्ण द्वारा गोपियों के साथ रंग-रास, अबीर-गुलाल का प्रयोग और वंशी की मधुर तान ये सब प्रसंग होली के आध्यात्मिक आनंद को व्यक्त करते हैं।

रंगं क्रीडन्ति गोपाला गोपीभिः
सह माधवः।

यहाँ रंग केवल बाह्य नहीं, बल्कि प्रेम-रंग है, जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। ब्रज की लठमार होली और फाग-उत्सव इसी पौराणिक परंपरा के प्रतीक हैं।

पुराणों में वसंत ऋतु को ऋतुराज कहा गया है। मत्स्य पुराण में वर्णन है कि वसंत में प्रकृति नवजीवन से भर उठती है। पेड़-पौधे पुष्पित होते हैं, कोयल का मधुर स्वर गूँजता है और वातावरण में नवीन ऊर्जा का संचार होता है। होली इसी नवचेतना का उत्सव है।

वसन्तसमये प्राप्ते कुसुमाकर शोभिते।

इस ऋतु में मनुष्य के भीतर भी नवसृजन की भावना जागृत होती है। पुराणों के अनुसार प्रकृति और पुरुष का यह सामंजस्य सृष्टि-चक्र की निरंतरता का प्रतीक है।

होलिका-दहन के संदर्भ में एक श्लोक प्रचलित है-

होलिकां दह्यते पापं प्रह्लादः पूज्यते सदा।

अर्थात् होलिका का दहन पापों के नाश का संकेत है और प्रह्लाद की पूजा सद्गुणों के सम्मान का प्रतीक। यह पर्व हमें सिखाता है कि ईश्वर-भक्ति, सत्यनिष्ठा और धैर्य अंततः विजय प्राप्त करते हैं।

धर्मशास्त्रों में फाल्गुन पूर्णिमा की रात्रि को जागरण का विधान भी बताया गया है। अग्नि के चारों ओर परिक्रमा कर लोग मंगलकामना करते हैं। यह परिक्रमा जीवन-चक्र का प्रतीक है, जिसमें व्यक्ति अपने दोषों को त्यागकर नवजीवन का संकल्प लेता है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। होली का दहन अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर होने का प्रतीक है।

पुराणों में यह भी कहा गया है कि इस दिन आपसी वैमनस्य त्यागकर प्रेम और सौहार्द का व्यवहार करना चाहिए। रंगों का प्रयोग सामाजिक भेदभाव को मिटाने का संकेत है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—सभी एक-दूसरे पर रंग डालते हैं, जिससे समता और बंधुत्व की भावना सुदृढ़ होती है। यह लोकधर्म और सनातन मूल्य दोनों का संगम है। होली के अवसर पर गाए जाने वाले फाग और भजन भी पुराण-प्रेरित हैं। उनमें कृष्ण-लीला, प्रहलाद-भक्ति और शिव-काम प्रसंग की झलक मिलती है। रंगों के माध्यम से व्यक्त उल्लास वास्तव में आत्मा के आंतरिक आनंद का विस्तार है। पुराणों की दृष्टि में जब मनुष्य अपने भीतर के विकारों को जला देता है और प्रेम-रंग में रंग जाता है, तभी उसका जीवन सफल होता है। इस प्रकार पुराणों में होली का पर्व बहुआयामी महत्व रखता है। यह अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है; यह भक्ति, सत्य और धैर्य की महिमा का उद्घोष है; यह प्रकृति के नवोत्थान और जीवन की उल्लासपूर्ण स्वीकृति का उत्सव है; यह सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक शुद्धि का अवसर है। होलिका-दहन हमें अपने भीतर के दैत्यत्व को जलाने की प्रेरणा देता है और रंगोत्सव हमें प्रेम, सौहार्द और समता के रंग में रंगने का संदेश देता है। इस प्रकार होली केवल एक लोकपर्व नहीं, बल्कि पुराण-सम्मत आध्यात्मिक साधना और सांस्कृतिक समन्वय का महान उत्सव है, जो मानव जीवन को प्रकाश, प्रेम और परमानंद की दिशा में अग्रसर करता है।

रूस की राजनीति में 'बिहारी तड़का'

अभय कुमार सिंह की अनोखी कहानी

अभय कुमार सिंह, मूल रूप से बिहार के पटना से हैं, आज रूस की राजनीति में एक महत्वपूर्ण नाम बन चुके हैं। वे रूस के कुर्स्क सिटी विधानमंडल में डिप्यूटेट (भारत में विधायक के समकक्ष) के रूप में कार्यरत हैं और रूस के राष्ट्रपति ब्लादीमिर पुतिन की पार्टी United Russia से जुड़े हुए हैं।

पटना से रूस तक का सफर

1991 में चिकित्सा की पढ़ाई के लिए रूस गए अभय कुमार सिंह ने कभी नहीं सोचा था कि वे एक दिन विदेशी धरती पर जनप्रतिनिधि बनेंगे। मेडिकल शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने रूस में ही अपना सामाजिक दायरा मजबूत किया और स्थानीय समाज से गहरा जुड़ाव बनाया। वर्ष 2015 में उन्होंने यूनाइटेड रशिया पार्टी की सदस्यता ली और 2017 में चुनाव जीतकर रूस के पहले भारतीय मूल के विधायक बने।

चुनाव प्रचार में भारतीय अंदाज

अभय कुमार सिंह ने रूसी चुनाव में भारतीय शैली का प्रचार अभियान अपनाया—घर-घर संपर्क, स्थानीय मुद्दों पर सीधा संवाद और व्यक्तिगत रिश्तों पर जोर। यही भारतीय तड़का उन्हें रिकॉर्ड मतों से जीत दिलाने में सहायक बना।

उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा कि भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता और जनता से सीधा संवाद उनकी सबसे बड़ी ताकत रही।

भारत-रूस संबंधों पर स्पष्ट राय

हाल ही में राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा से पहले अभय कुमार सिंह ने भारत-रूस रक्षा सहयोग की सराहना की। उन्होंने रूस निर्मित एस-400 मिसाइल प्रणाली को प्रभावी बताया और भारत को भविष्य में उन्नत एस-500 प्रणाली पर भी विचार करने की सलाह दी।

दो देशों के बीच सेतु

अभय कुमार सिंह आज भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक और राजनीतिक सेतु की भूमिका निभा रहे हैं। उनकी सफलता यह दर्शाती है कि भारतीय प्रतिभा वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रही है। यह कहानी केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं, बल्कि भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों और परिश्रम की मिसाल है। बिहार की धरती से उठकर रूस की राजनीति तक पहुँचना इस बात का प्रमाण है कि अवसर सीमाओं से परे होते हैं।

युद्धकाल में सेवा का संकल्प

रूस के कुर्स्क क्षेत्र से विधायक बने अभय कुमार सिंह की एक और प्रेरक कहानी मानवीय सेवा से जुड़ी है। राजनीति में आने के बाद उन्होंने केवल भाषणों तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि संकट के समय ज़मीन पर उतरकर काम किया।

संकट के समय राहत कार्य

कुर्स्क क्षेत्र में तनावपूर्ण परिस्थितियों और सुरक्षा चुनौतियों के दौरान अभय कुमार सिंह ने स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर राहत एवं चिकित्सा सहायता शिविरों के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई। एक चिकित्सक होने के कारण उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी और जरूरतमंदों तक दवाइयाँ पहुँचाने में विशेष रुचि दिखाई।

स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम चलाने की पहल की।

भारतीय छात्रों की मदद

रूस में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों के लिए भी वे सहारा बने। कई मौकों पर उन्होंने दूतावास और स्थानीय प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित कर छात्रों की समस्याओं का समाधान कराया।

उनका कहना है—

'विदेश में रहने वाला हर भारतीय मेरा परिवार है।'

भारतीय संस्कृति का विस्तार

अभय कुमार सिंह ने रूस में होली, दिवाली और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसे आयोजनों को बढ़ावा दिया। इन कार्यक्रमों में रूसी नागरिकों की भागीदारी ने भारत-रूस सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत किया।

युवाओं के लिए नई दिशा

उनकी यह मान्यता है कि राजनीति केवल सत्ता का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा का अवसर है।

वे युवाओं को संदेश देते हैं—
विदेश जाएँ, सीखें
अपनी जड़ों से जुड़े रहें
जहाँ रहें, वहाँ समाज के लिए काम करें

अभय कुमार सिंह की यह कहानी बताती है कि सच्चा जनप्रतिनिधि वही है जो संकट में सबसे आगे खड़ा हो।

बिहार से रूस तक की उनकी यात्रा यह सिद्ध करती है कि भारतीय संस्कार और सेवा भावना किसी भी देश में सम्मान दिला सकती है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

चुनावी साल में पीएम का दौरा, क्यों अहम है बराक घाटी ?

बराक घाटी — जिसमें कछार, श्रीभूमि और हैलाकांडी जिले आते हैं — राज्य की कई सीटों पर चुनावी परिणाम तय करने की क्षमता रखती है। यहां का मतदाता आधार जातीय, भाषाई और धार्मिक विविधता से भरा है, और पिछले चुनावों में यहां कड़ा मुकाबला देखने को मिला है।

हिमंत बिस्व सरमा की मौजूदगी में होने वाली यह रैली साफ संकेत देती है कि भाजपा दक्षिण असम को विकास बनाम अस्थिरता के फ्रेम में पेश करना चाहती है।

22,000 करोड़ रु. का एक्सप्रेसवे : चुनावी गेमचेंजर ?

बराक घाटी विकास विभाग के मंत्री कौशिक राय के अनुसार, प्रस्तावित एक्सप्रेसवे से सिलचर-गुवाहाटी यात्रा समय घटकर लगभग 4.5 घंटे रह जाएगा।

विश्लेषक मानते हैं कि इतनी बड़ी लागत वाली परियोजना का ऐलान केवल बुनियादी ढांचे तक सीमित नहीं, बल्कि राजनीतिक संदेश भी है —

भाजपा दक्षिण असम को राज्य की मुख्यधारा से जोड़ने का श्रेय लेना चाहती है।

विपक्ष इसे चुनावी घोषणा करार दे सकता है।

564 करोड़ का फ्लाईओवर : शहरी वोट बैंक पर नजर

सिलचर फ्लाईओवर की आधारशिला शहरी मतदाताओं को साधने की कोशिश के रूप में देखी जा रही है। बढ़ते ट्रैफिक और बुनियादी ढांचे की मांग को भाजपा अपने पक्ष में भुनाना चाहती है।

मुख्य सचिव रवि कोटा और पुलिस महानिदेशक हरमीत सिंह ने सुरक्षा और प्रशासनिक तैयारियों की समीक्षा की है।

कारोबारी जगत में हलचल अनिल अंबानी को बड़ा झटका

5000 करोड़ रु. के 'अबोड' पर ईडी का कब्जा 15,700 करोड़ से अधिक संपत्ति अटैच

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/मुंबई

देश के चर्चित उद्योगपति अनिल अंबानी को बड़ा कानूनी झटका लगा है। प्रवर्तन निदेशालय (प्रवर्तन निदेशालय) ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मुंबई के पाली हिल स्थित उनकी आलीशान इमारत 'अबोड' को अटैच कर लिया है।

करीब 66 मीटर ऊंची और 17 मंजिला यह इमारत मुंबई के सबसे महंगे निजी आवासों में गिनी जाती है। आधिकारिक दस्तावेजों में इसकी कीमत लगभग 3,716 करोड़ रुपये बताई गई है, जबकि बाजार मूल्य 5,000 करोड़ रुपये तक आंका जाता रहा है।

15,700 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति अटैच

ईडी ने यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA) के तहत की है। एजेंसी के अनुसार, अंबानी और उनके समूह की कंपनियों से जुड़ी अब तक 15,700 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियां अटैच की जा चुकी हैं। 'अबोड' पर कार्रवाई इसी व्यापक जांच का हिस्सा है।

हाईकोर्ट से भी राहत नहीं

23 फरवरी को एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में बॉम्बे हाई कोर्ट की खंडपीठ ने अंबानी को मिली अंतरिम राहत को रद्द कर दिया। अदालत ने बैंकों की उस प्रक्रिया पर रोक को गैर-कानूनी बताया, जिसमें खातों को 'धोखाधड़ी' श्रेणी में डालने की कार्रवाई की जा रही थी। अदालत के इस फैसले के बाद बैंकों और जांच एजेंसियों के लिए आगे की कार्रवाई का रास्ता साफ हो गया है।

कारोबारी और कानूनी हलकों में चर्चा

इस कार्रवाई के बाद उद्योग जगत, बैंकिंग क्षेत्र और निवेशकों के बीच हलचल तेज हो गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह मामला कॉरपोरेट गवर्नेंस, बैंकिंग जवाबदेही और वित्तीय पारदर्शिता के संदर्भ में एक बड़ी मिसाल बन सकता है। कानूनी प्रक्रिया के तहत हो रही कार्रवाई यह संदेश देती है कि वित्तीय अनियमितताओं के मामलों में एजेंसियां सख्त रुख अपना रही हैं। अंतिम निर्णय न्यायालय के अधीन है, लेकिन यह प्रकरण कारोबारी जगत में जवाबदेही और पारदर्शिता पर नई बहस को जन्म दे रहा है।

▶▶ भारत-इजरायल संबंधों में नई ऊर्जा

पीएम मोदी का इजरायल दौरा रणनीतिक साझेदारी को नई दिशा

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/यरूशलम

नरेंद्र मोदी दो दिवसीय इजरायल दौरे पर पहुंचे, जहां उनका स्वागत बेंजामिन नेतन्याहू ने बेन-गुरियन एयरपोर्ट पर गर्मजोशी से किया। दोनों नेताओं के बीच आत्मीय मुलाकात ने भारत-इजरायल संबंधों की गहराई और भरोसे को एक बार फिर उजागर किया। नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री मोदी को महान नेता बताते हुए भारत को वैश्विक मंच पर उभरती शक्ति कहा। 2017 के ऐतिहासिक दौरे के बाद यह प्रधानमंत्री मोदी की पहली इजरायल यात्रा है, जिसे कूटनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

रणनीतिक और रक्षा सहयोग पर फोकस

दौरे के दौरान रक्षा, कृषि, जल प्रबंधन, साइबर सुरक्षा और तकनीकी सहयोग जैसे मुद्दों पर व्यापक चर्चा होने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार, दोनों देशों के बीच बड़े रक्षा समझौतों और संयुक्त नवाचार परियोजनाओं पर भी सहमति बन सकती है।

इजरायल के राष्ट्रपति इसहाक हर्ज़ोग से भी प्रधानमंत्री की मुलाकात प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त इजरायली संसद 'नेसेट' को संबोधित करने का कार्यक्रम भी चर्चा में है, जो भारत-इजरायल संबंधों के लिए प्रतीकात्मक महत्व रखता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं और क्षेत्रीय समीकरण

प्रधानमंत्री मोदी के इस दौरे पर वैश्विक समुदाय की निगाहें टिकी हैं। विशेषकर पश्चिम एशिया की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों और ईरान-इजरायल तनाव के बीच यह यात्रा कूटनीतिक संतुलन का संकेत मानी जा रही है। पाकिस्तान सहित कुछ इस्लामिक देशों की मीडिया में भी इस दौरे को लेकर चर्चा तेज है।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत अपनी 'संतुलित विदेश नीति' के तहत सभी पक्षों से संवाद बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दे रहा है।

अटूट मित्रता की नई परिभाषा

भारत और इजरायल के बीच पिछले वर्षों में कृषि तकनीक, रक्षा उत्पादन, स्टार्टअप सहयोग और जल संरक्षण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। प्रधानमंत्री मोदी का यह दौरा इस साझेदारी को और सशक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की सक्रिय और संतुलित कूटनीति देश को एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है। यह दौरा न केवल द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती देगा, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और विकास के नए अवसर भी देने में सहायक होगा।

म्यूचुअल फंड नियमों में संशोधन : सोने व चांदी में ज्यादा पैसे लगा सकेंगे निवेशक

नई दिल्ली। पूंजी बाजार नियामक सेबी ने बृहस्पतिवार को म्यूचुअल फंड नियमों में ब ?ा बदलाव किया है। कुछ नई श्रेणियों की योजनाओं को शामिल किया गया है और पोर्टफोलियो ओवरलैप पर अंकुश लगाया गया है। सोने-चांदी में अधिक निवेश की मंजूरी दी गई है। यह कदम नियामक के म्यूचुअल फंड नियमों को और सख्त बनाने के प्रयासों का हिस्सा है। इसके तहत योजनाओं का स्पष्ट वर्गीकरण और मानकीकृत खुलासे किए जाएंगे। इससे भारत के तेजी से बढ़ते 900 अरब डॉलर के उद्योग में निवेशकों के हितों की सुरक्षा मजबूत होगी। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के नए नियमों के तहत, म्यूचुअल फंड्स को इक्विटी स्कीमों में तय सीमा के निवेश के बाद बाकी बचे हिस्से को सोने और चांदी के साधनों में निवेश की अनुमति दी गई है। हाइब्रिड स्कीम सोने और चांदी के एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ) में निवेश कर सकते हैं। नए नियमों ने इक्विटी और हाइब्रिड स्कीमों में विशेष रूप से बाकी बचे हिस्से के भीतर कीमती धातुओं में निवेश को मानकीकृत कर दिया है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

मणिपुर में शांति बहाली पर केंद्र-राज्य की उच्चस्तरीय बैठक

व्यापक चर्चा

मुख्यमंत्री के साथ उपमुख्यमंत्री नेमचा किपगेन) तथा उपमुख्यमंत्री लोसी दीखो) भी मौजूद थे।

सूत्रों के अनुसार, बैठक में मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं पर चर्चा हुई-हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में कानून-व्यवस्था की मजबूती

आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों के त्वरित पुनर्वास

पहाड़ी और घाटी जिलों में दीर्घकालिक स्थिरता और विकास आधारित सामान्य स्थिति

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को राज्य सरकार द्वारा अब तक उठाए गए कदमों की जानकारी दी और केंद्र से समन्वय बढ़ाने का अनुरोध किया।

5,000 घरों को मंजूरी : पुनर्वास को बल

इसी दिन एक अहम फैसले में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (PMAY-G) के तहत हिंसा प्रभावित विस्थापित परिवारों के लिए 5,000 घरों के निर्माण को मंजूरी दी।

इसे मणिपुर में दीर्घकालिक पुनर्वास और पुनर्स्थापन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

टेरिटोरियल आर्मी बटालियन का प्रस्ताव

नई दिल्ली प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से भी मुलाकात की।

इन बैठकों में मणिपुर के लिए टेरिटोरियल आर्मी बटालियन गठित करने का प्रस्ताव तथा IDPs के पुनर्वास उपायों पर विस्तार से चर्चा हुई। राज्य सरकार का मानना है कि यह कदम सुरक्षा सुदृढ़ीकरण और युवाओं को रोजगार के अवसर देने में सहायक होगा।

महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास पर जोर

मुख्यमंत्री खेमचंद सिंह ने प्रधानमंत्री से मणिपुर में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विशेष सहयोग की मांग की। उन्होंने कहा कि पहाड़ी और घाटी — दोनों क्षेत्रों में संतुलित और समावेशी विकास ही स्थाई शांति की कुंजी है।

अलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल
संचार क्रांति के अग्रदूत

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब विश्व औद्योगिक क्रांति के दौर से गुजर रहा था, तब संचार के क्षेत्र में एक ऐसी खोज हुई जिसने मानव सभ्यता की दिशा बदल दी। टेलीफोन के आविष्कारक अलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल ने दूरियों को पाटकर संवाद को तत्काल और सजीव बना दिया। आज की डिजिटल दुनिया—मोबाइल, इंटरनेट कॉल और वीडियो संवाद—की आधारशिला उसी ऐतिहासिक आविष्कार में निहित है।

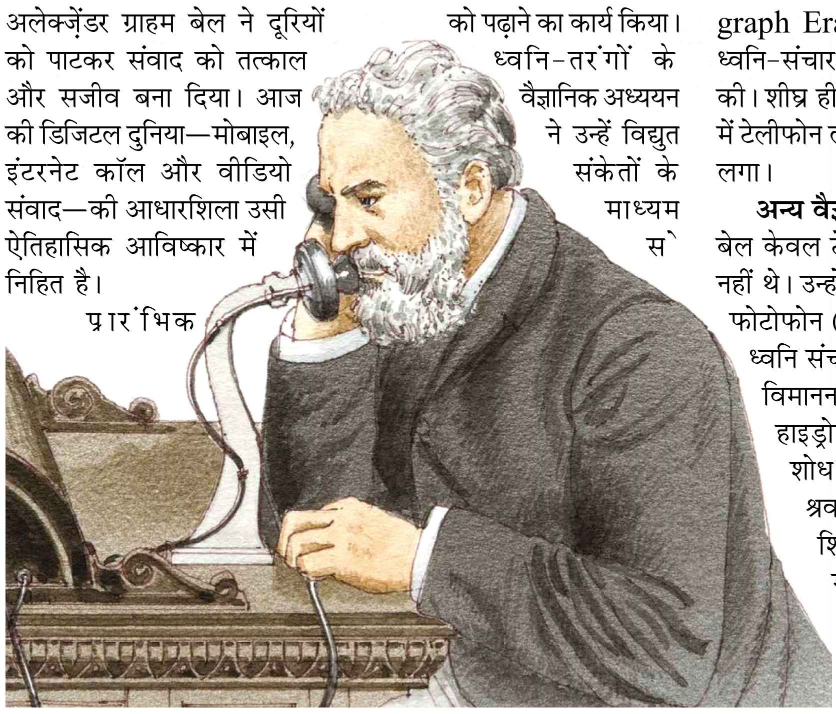

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

अलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल का जन्म 3 मार्च 1847 को स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में हुआ। उनका परिवार वाणी-विज्ञान (Speech Science) और ध्वनि-शिक्षण से जुड़ा था। उनकी माता आंशिक रूप से बधिर थीं, जिसके कारण बेल की रुचि ध्वनि, भाषा और श्रवण-विज्ञान में गहरी हुई।

बाद में वे कनाडा और फिर अमेरिका चले गए, जहाँ उन्होंने बहरे बच्चों को पढ़ाने का कार्य किया। ध्वनि-तरंगों के वैज्ञानिक अध्ययन ने उन्हें विद्युत संकेतों के माध्यम से आवाज़ भेजने के प्रयोगों की ओर प्रेरित किया।

टेलीफोन का आविष्कार (1876)

7 मार्च 1876 को बेल को टेलीफोन के लिए पेटेंट प्राप्त हुआ। 10 मार्च 1876 को उन्होंने अपने सहायक थॉमस वॉटसन से कहा—

"Mr. Watson, come here, I want to see you."

यह इतिहास का पहला सफल टेलीफोन संदेश माना जाता है।

इस आविष्कार ने तार-युग (Telegraph Era) से आगे बढ़कर ध्वनि-संचार के युग की शुरुआत की। शीघ्र ही अमेरिका और यूरोप में टेलीफोन लाइनों का विस्तार होने लगा।

अन्य वैज्ञानिक योगदान

बेल केवल टेलीफोन तक सीमित नहीं थे। उन्होंने—

फोटोफोन (प्रकाश के माध्यम से ध्वनि संचार) पर कार्य किया।

विमानन (Aviation) और हाइड्रोफॉइल तकनीक पर शोध किया।

श्रवण-बाधित लोगों की शिक्षा और पुनर्वास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वे National Geographic Society से भी जुड़े रहे और विज्ञान-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई।

विवाद और ऐतिहासिक संदर्भ

टेलीफोन के आविष्कार को लेकर इतिहास में कुछ विवाद भी रहे हैं। इटली के आविष्कारक एंटोनियो मेउच्ची और अन्य वैज्ञानिकों ने भी समान प्रयोग किए थे। फिर भी, कानूनी और तकनीकी रूप से बेल को ही प्रथम पेटेंट धारक और व्यावसायिक रूप से सफल आविष्कारक माना जाता है।

वैश्विक प्रभाव

टेलीफोन ने व्यापार, प्रशासन, पत्रकारिता और सामाजिक जीवन को नया आयाम दिया।

आज की दूरसंचार क्रांति—मोबाइल नेटवर्क, उपग्रह संचार और इंटरनेट—बेल के मूल सिद्धांतों पर ही विकसित हुई है।

भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों में दूरसंचार क्षेत्र राष्ट्रीय विकास का आधार बन चुका है। संचार की तीव्रता ने अर्थव्यवस्था, आपदा-प्रबंधन और शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं।

निष्कर्ष

अलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल का जीवन यह प्रमाणित करता है कि वैज्ञानिक जिज्ञासा और मानवीय संवेदनशीलता मिलकर विश्व को बदल सकती है। उनकी खोज ने केवल तकनीकी प्रगति ही नहीं, बल्कि मानवीय संवाद की संस्कृति को भी नई दिशा दी।

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

रंगों का यह पावन पर्व आपके जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता के उजले रंग भर दे। आपका विश्वास और सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

इसी विश्वास के साथ हम आपके साथ निरंतर जुड़े रहने का संकल्प लेते हैं। आप सभी को होली की मंगलकामनाएँ।

रत्ना सिंह

पार्षद जीएमसी वार्ड नंबर 31

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

रंगों का यह पावन पर्व आप सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि के नव-रंग भर दे।आइए, प्रेम, सद्भाव और भाईचारे की भावना के साथ समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करें।आप सभी को रंगोत्सव की मंगलकामनाएँ।

अशोक सिंहल

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा सिंचाई मंत्री, असम सरकार

सावित्रीबाई फुले : शिक्षा, साहस और सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत

भारतीय समाज में जब स्त्रियों और दलित वर्ग के लिए शिक्षा के द्वार लगभग बंद थे, तब एक साहसी महिला ने परंपराओं को चुनौती दी। वह थीं सावित्रीबाई फुले—भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, कवयित्री और सामाजिक सुधारक। उनका जीवन केवल इतिहास का अध्याय नहीं, बल्कि आज भी समाज को दिशा देने वाली चेतना है।

शिक्षा की पहली मशाल

3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में जन्मी सावित्रीबाई का विवाह कम आयु में ही Jyotirao Phule से हुआ। ज्योतिराव फुले ने उन्हें शिक्षित किया और दोनों ने मिलकर 1848 में पुणे में बालिकाओं के लिए पहला आधुनिक विद्यालय शुरू किया।

उस समय लड़कियों को पढ़ाना पाप माना जाता था। सावित्रीबाई जब स्कूल जातीं, तो लोगों द्वारा उन पर पत्थर और कीचड़ फेंका जाता। किंतु वे अतिरिक्त साड़ी लेकर निकलतीं और स्कूल पहुँचकर बदली कर लेतीं—यह उनकी अडिग निष्ठा और साहस का प्रतीक है।

साहित्य और सामाजिक चेतना

सावित्रीबाई केवल शिक्षिका ही नहीं, एक संवेदनशील कवयित्री भी थीं। उनकी कविताएँ शिक्षा, आत्मसम्मान और समानता का संदेश देती हैं। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह, छुआछूत उन्मूलन और बाल विवाह के विरोध में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

उन्होंने 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना कर अनचाहे शिशुओं को संरक्षण देने का कार्य किया—जो उस समय अत्यंत क्रांतिकारी कदम था।

महामारी में सेवा

1897 में पुणे में प्लेग महामारी फैली। सावित्रीबाई ने रोगियों की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। एक संक्रमित बच्चे की सेवा करते हुए वे स्वयं भी प्लेग की शिकार हुईं और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया। उनका जीवन अंत तक सेवा और करुणा का उदाहरण रहा।

आज के संदर्भ में सावित्रीबाई

आज जब हम 'नारी सशक्तिकरण' और 'समावेशी शिक्षा' की बात करते हैं, तो उसकी जड़ें सावित्रीबाई फुले के प्रयासों में दिखाई देती हैं।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

जुबीन गर्ग मृत्यु प्रकरण

सातों आरोपियों की जमानत याचिकाएं खारिज की जा चुकी हैं और आरोपी पिछले पांच महीनों से जेल में हैं।

परिवार और अभियोजन की चिंता -सुनवाई में देरी जुबीन गर्ग की पत्नी गरिमा सैकिया गर्ग और उनकी बहन पाम्मी बोरठाकुर ने मामले की धीमी प्रगति पर असंतोष जताया है।

गरिमा ने कहा, हम लंबे समय से फास्ट-ट्रैक कोर्ट और रोजाना सुनवाई की मांग कर रहे हैं। आरोपियों की लगातार याचिकाओं के कारण प्रक्रिया में देरी हो रही है।

सरकारी पक्ष (अभियोजन) के वकील जियाउल कमर ने भी फास्ट-ट्रैक कोर्ट की आवश्यकता दोहराई है। उनका कहना है कि आरोपियों द्वारा बार-बार अलग-अलग याचिकाएं दायर किए जाने से नियमित सुनवाई अभी शुरू नहीं हो पाई है।

मुख्यमंत्री का रुख - राजनीतिक नजरिए से न देखें मुख्यमंत्री सरमा ने विपक्ष के उस आरोप को खारिज किया कि विधानसभा चुनाव के बाद आरोपियों को राहत मिल सकती है। उन्होंने कहा, जुबीन राजनीति से ऊपर थे। इस मामले को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि यदि मामला फास्ट-ट्रैक कोर्ट में जाता है और अदालत जमानत दे देती है, तो उसके लिए सरकार को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए।

टी20 विश्व कप 2026 : रोमांच, रिकॉर्ड और रफ्तार का संगम

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

टी-20 विश्व कप 2026 अब अपने रोमांचक मोड़ पर है। लीग चरण के अधिकांश मुकाबले पूरे हो चुके हैं और अब तस्वीर धीरे-धीरे साफ होने लगी है कि कौन सी टीमें सेमीफाइनल की ओर बढ़ रही हैं। इस बार का टूर्नामेंट केवल चौकों-छक्कों का नहीं, बल्कि रणनीति, संयम और साहस का भी रहा है।

हाई-स्कोरिंग मुकाबलों की भरमार

इस विश्व कप की पिचें बल्लेबाजों के लिए अनुकूल रही हैं।
कई मैचों में 180+ और 200 के आसपास स्कोर देखने को मिले।
पावरप्ले में आक्रामक शुरुआत ने मैच का रुख तय किया।
डेथ ओवरों में फिनिशरों की भूमिका निर्णायक रही।
दर्शकों को आखिरी ओवर तक सांस रोक देने वाले मुकाबले देखने को मिले—यही टी-20 की असली पहचान है।

भारत : संतुलन और आत्मविश्वास

भारतीय टीम ने अब तक संतुलित क्रिकेट खेला है।
शीर्ष क्रम ने तेज शुरुआत दी।
मध्यक्रम ने दबाव में पारी संभाली।
गेंदबाजों ने पावरप्ले और डेथ ओवर में अनुशासन दिखाया। स्पिनरों ने बीच के ओवरों में रन गति पर लगाम लगाई, जबकि तेज गेंदबाजों ने नई गेंद से विकेट निकालकर विपक्ष को बैकफुट पर डाला। भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी टीम डेप्थ रही है—हर खिलाड़ी अपनी भूमिका स्पष्ट रूप से निभा रहा है।

उभरती टीमों का साहस

इस विश्व कप की सबसे रोचक बात यह रही कि एसोसिएट और अपेक्षाकृत कमजोर मानी जाने वाली टीमों ने भी बड़े देशों को कड़ी टक्कर दी।

- कुछ मैचों में अंतिम ओवर में परिणाम तय हुआ।
- युवा खिलाड़ियों ने बेखौफ क्रिकेट खेलकर भविष्य की झलक दिखा दी।
- यह संकेत है कि वैश्विक स्तर पर क्रिकेट का दायरा तेजी से बढ़ रहा है।

रणनीति का खेल

टी-20 अब केवल ताकत का नहीं, बल्कि दिमाग का खेल बन चुका है।
टीमों ने परिस्थिति के अनुसार बल्लेबाजी क्रम बदला।
इम्पैक्ट प्लेयर जैसी रणनीतियों का प्रभाव दिखा।

सेमीफाइनल की दौड़

अंक तालिका में शीर्ष चार स्थानों के लिए कड़ा मुकाबला है। नेट रन रेट भी कई टीमों के लिए जीवनरेखा बना हुआ है। अब हर मैच करो या मरो की स्थिति जैसा बन चुका है। टी-20 विश्व कप 2026 ने यह साबित कर दिया है कि क्रिकेट केवल खेल नहीं, बल्कि वैश्विक उत्सव है। रोमांच अपने चरम पर है, युवा सितारे उभर रहे हैं, रणनीति और संयम की परीक्षा हो रही है, यदि यही गति बनी रही, तो सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले ऐतिहासिक बन सकते हैं।

जिम्बाब्वे पर जीत के बाद भी खुश नहीं सूर्यकुमार, बोले-
बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे, साथ ही बताया कहां सुधार जरूरी

नई दिल्ली। टी20 विश्व कप 2026 के सुपर-8 में भारतीय टीम का खाता खुला गया है। गुरुवार को भारत ने जिम्बाब्वे को 72 रन से मात दी। मैच के हीरो हार्दिक पांड्या रहे। भारतीय ऑलराउंडर ने 23 गेंदों पर नाबाद 50 रन बनाए। वहीं अभिषेक शर्मा ने 55 रन की पारी खेली। जीत के बाद भी भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव खुश नजर नहीं आए। उन्होंने यह बात मानी कि हम गेंदबाजी में बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। इतना ही नहीं स्काई ने वेस्टइंडीज के खिलाफ अगले मैच का प्लान भी शेयर किया। यह मैच 1 मार्च को कोलकाता में खेला जाएगा।

भारतीय टीम ने ऐसे की वापसी

भारतीय कप्तान ने कहा, मुझे लगता है कि हम सब कुछ पीछे छोड़ना चाहते थे। हमने लीग स्टेज में या अहमदाबाद में खेले गए पिछले मैच में जो कुछ किया, उसके बारे में ज्यादा नहीं सोचा। हमारे वीडियो एनालिस्ट ने सभी बल्लेबाजों और गेंदबाजों के लिए एक स्लाइड तैयार की थी। इसमें पिछले एक साल में हमारे अच्छे प्रदर्शन को दिखाया गया था। हमने उसे देखा, इससे काफी पॉजिटिविटी मिली और हम क्लियरटी के साथ यहां आए।

गेंदबाजी बेहतर हो सकती

उन्होंने कहा, टॉप ऑर्डर से लेकर सातवें नंबर तक के बल्लेबाजों के योगदान को देखते हुए मुझे लगता है कि हमारे प्रदर्शन में शायद ही कोई कमी थी। सच कहूं तो हम गेंदबाजी में थोड़ा और बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। लेकिन आखिरकार, जीत तो जीत होती है, और हम इसे लेकर आगे बढ़ेंगे।

जिम्बाब्वे की तारीफ की

उन्होंने कहा कि वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के खिलाफ खेलते समय हम कुछ चीजों पर खास ध्यान देंगे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

काजीरंगा में 1.05 लाख जलपक्षियों

सबसे महत्वपूर्ण आश्रय स्थलों में से एक के रूप में स्थापित करती है।

कौन-कौन सी प्रजातियां प्रमुख रहीं ?

सर्वेक्षण में चराई करने वाले जलपक्षी, डैबलिंग और डाइविंग बत्तखें, दलदली प्रजातियां, बगुले, कॉमोरेंट और मछली खाने वाले शिकारी पक्षी शामिल रहे।

प्रमुख आंकड़े इस प्रकार हैं-
बार-हेडेड गूज-19,133
ग्रेलेग गूज-6,533,
गैडवाल - 5,283, ग्रीन-विंग्ड टील - 5,220, फेरुजिनस पचार्ड - 5,594, लेसर व्हिस्लिंग डक -6,700, ग्रे-हेडेड स्वामफेन - 6,286 केवल प्रवासी हंसों की संख्या ही 25,000 से अधिक दर्ज की गई, जो इस क्षेत्र की वैश्विक पारिस्थितिक अहमियत को दर्शाती है।

संकटग्रस्त प्रजातियों की मौजूदगी सर्वेक्षण में कई वैश्विक संरक्षण चिंता वाली प्रजातियां भी दर्ज की गईं-
ग्रेटर एडजुटेंट - 66 (संकटग्रस्त) पल्लास फिश ईगल - 61 (संकटग्रस्त), लेसर एडजुटेंट - 257 (असुरक्षित), ओरिएंटल डार्टर-1,102 (निकट संकटग्रस्त) इनमें से कई प्रजातियां भारत के वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की विभिन्न अनुसूचियों में संरक्षित हैं।

आर्द्रभूमि की भूमिका

रोमरी बील और डोंडुवा बील जैसे प्रमुख आर्द्रभूमि केंद्र जलपक्षियों के बड़े जमावड़े के केंद्र बने।

रिंकू सिंह के ऊपर टूटा दुखों का पहाड़, पिता खानचंद का निधन

नई दिल्ली: भारतीय टीम के बल्लेबाज रिंकू सिंह के पिता का निधन हो गया है। वे लंबे समय से लिवर कैंसर की समस्या से जूझ रहे थे और ग्रेटर नोएडा के यथार्थ हॉस्पिटल में उनका इलाज चल रहा था। हाल ही में रिंकू के अपने पिता से मिलने की खबर सामने आई थी। हालांकि, वे गुरुवार को जिम्बाब्वे के खिलाफ मैच के दौरान फील्डिंग करते हुए दिखाई दिए थे। रिंकू के पिता को वेंटिलेटर पर रखा गया था और उनके हाल में सुधार की खबरें भी सामने आई थी। हालांकि, अब रिंकू के लिए ये बहुत ही दुख वाला समय है। उनके पिता ने साथ छोड़ दिया है।

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

भुवन पेगु
विधायक,
जोनाई विधानसभा क्षेत्र

रंगों का यह पावन पर्व विद्यार्थियों, अभिभावकों और समस्त नागरिकों के जीवन में ज्ञान, सफलता और खुशियों के नए रंग भर दे। आइए, प्रेम, अनुशासन और सकारात्मक ऊर्जा के साथ उज्वल भविष्य का संकल्प लें। आप सभी को होली की मंगलकामनाएँ।

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

रंगों का यह पावन पर्व हमारे सभी विद्यार्थियों के जीवन में सफलता, आत्मविश्वास और उपलब्धियों के नए रंग भरे। आपकी मेहनत और हमारा मार्गदर्शन मिलकर उज्वल भविष्य का निर्माण करें— यही हमारी कामना है। आप सभी को होली की मंगलकामनाएँ।

GYANPUNJ
COACHING INSTITUTE

नं. 1, रामनगर पथ, ज्योतिकुची, बेबीलॉन अपार्टमेंट के पीछे

दौल उत्सव : असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की सुंदर अभिव्यक्ति

जन जन विचार
...✍ मरजीना बेगम

देश के अन्य भागों की भाँति असम में भी दौल उत्सव अत्यंत श्रद्धा, उल्लास और सांस्कृतिक वैभव के साथ मनाया जाता है। यह पर्व असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की सजीव अभिव्यक्ति है और यहाँ के सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न अंग है। यद्यपि राज्य के विभिन्न जिलों में इसका आयोजन होता है, तथापि इसका सर्वाधिक प्रभाव और भव्यता बरपेटा जिले में दृष्टिगोचर होती है।

बरपेटा का दौल उत्सव केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जन-जीवन का उत्सव है। इस अवसर पर लोग अपने दैनिक कष्टों और चिंताओं को विस्मृत कर पारंपरिक उल्लास में डूब जाते हैं। उनके लिए यह रंगों का खेल मात्र नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मिलन, लोक-संगीत, सामूहिक नृत्य और भक्ति-रस का अनुपम संगम है।

दौल उत्सव को होली या फाकुवा के नाम से भी जाना जाता है। फागुन और चैत (छोट) के महीनों में जब वसंत ऋतु का आगमन होता है, प्रकृति नवजीवन से आलोकित हो उठती है—पेड़ों पर कोमल हरित पत्तियाँ लहलहाती हैं, पुष्प खिलते हैं, पंछी मधुर स्वरों में गान करते हैं और वातावरण में सुगंध व्याप्त हो जाती है। इसी नव-सृजन के उल्लास में असम का यह पर्व प्रेम, मैत्री और एकता का संदेश देता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह उत्सव भगवान श्रीकृष्ण और राधा की रास-लीलाओं से जुड़ा है, जब श्रीकृष्ण रंगों से क्रीड़ा करते थे। साथ ही, यह होलिका-दहन की कथा से भी संबद्ध है, जो असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है।

इस पर्व के अवसर पर घर-घर में पीठा, लारू और जोलपान जैसे पारंपरिक व्यंजन तैयार किए जाते हैं। लोग मंदिरों में जाकर राधा-कृष्ण की आराधना करते हैं। मंदिरों और नामघरों को पुष्पों और प्रकाश से सजाया जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कीर्तन और भक्ति-संगीत से वातावरण भक्तिमय हो उठता है।

बरपेटा के होलीगीत (होलिगीत) विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। ये गीत भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति में रचित भावपूर्ण काव्य-रचनाएँ हैं, जिनकी गूंज प्रत्येक असमिया के हृदय को स्पंदित कर देती है। दूर-दराज़ से श्रद्धालु बरपेटा सत्र में इस अद्वितीय उत्सव के साक्षी बनने आते हैं।

इतिहास साक्षी है कि दौल उत्सव की परंपरा महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित नव-वैष्णव आंदोलन से जुड़ी है। उनके महान नाट्य-प्रयोग 'चिह्न यात्रा' के उपरांत इस उत्सव की परंपरा को सुदृढ़ रूप मिला। उनके शिष्य परंपरा में मथुरा दास बूरा अता ने बरपेटा में वैकुंठीय दौल उत्सव की शुरुआत की। आज भी यह सत्रीय परंपरा उसी गरिमा के साथ निभाई जा रही है। बरपेटा सत्र को 'द्वितीय वैकुंठ पुरी' की संज्ञा दी जाती है।

बरपेटा में दौल उत्सव तीन से पाँच दिनों तक मनाया जाता है। तीन दिवसीय आयोजन को 'बुढ़ा दौल' तथा चार या पाँच दिवसीय आयोजन को 'डेका दौल' कहा जाता है।

प्रथम दिवस (गंध या बनोत्सव) – इस दिन वैष्णवजन मेजी के लिए सामग्री लाते हैं। सायंकाल महाप्रभु दौल गोविंद और कालिया ठाकुर को गायन-बायन के साथ मणिकूट घर से लाया जाता है। मेजी के चारों ओर सात परिक्रमा की जाती है। आतिशबाज़ी इसका प्रमुख आकर्षण है।

द्वितीय दिवस (भर दौल) : जगमोहन घर में नाम-प्रसंग, ओझापाली, गायन-बायन तथा धूलिया नृत्य का आयोजन होता है।

अंतिम दिवस (फाकुआ या सुवेरी) प्रातः महाप्रभु को कीर्तन-घर में प्रतिष्ठित किया जाता है। दोपहर में पुनः मठर चाताल में लाकर फाकुगुड़ी (अबीर) की वर्षा की जाती है। होलिगीतों की गूंज से सम्पूर्ण बरपेटा आलोकित हो उठता है। महाप्रभु और कालिया ठाकुर सुसज्जित डोले पर विराजमान होकर भव्य शोभायात्रा में सम्मिलित होते हैं।

रंगों का राग, रिश्तों का संग : होली का बहुरंगी उत्सव

फाल्गुन की पूर्णिमा जैसे ही क्षितिज पर मुस्कराती है, पूरा भारत रंगों की मस्ती में डूब उठता है। होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का उत्सव है—जहाँ उल्लास है, उन्मुक्तता है और सबसे बढ़कर रिश्तों की पुनर्स्थापना का अवसर है। होली की शुरुआत होलिका-दहन से होती है। पौराणिक कथा के अनुसार भक्त प्रह्लाद की आस्था को डिगाने के लिए हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका की सहायता ली, किंतु दैवी कृपा से प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका दग्ध हो गई। यह प्रसंग सत्य की विजय और अन्याय के अंत का प्रतीक बन गया। इसी स्मृति में लोग अग्नि प्रज्वलित कर बुराइयों को त्यागने का संकल्प लेते हैं। अगले दिन रंगों की होली खेली जाती है। गुलाल की कोमल उड़ान, पानी की फुहारें और ढोल की थाप वातावरण को उत्साह से भर देती हैं। बच्चे हों या बुजुर्ग, स्त्री हो या पुरुष—सब सामाजिक भेद भूलकर एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। यह वह क्षण होता है जब मन के मैल भी धुल जाते हैं और रिश्तों में नई मिठास घुल जाती है।

होली का सांस्कृतिक पक्ष भी अत्यंत समृद्ध है। ब्रज की फाग, बनारस की ठुमरी, बिहार की जोगीरा और असम का फाकुवा—हर क्षेत्र की अपनी अलग छटा है। घर-घर में गुजिया, मालपुआ, दही-बड़ा और ठंडाई जैसे पारंपरिक व्यंजन बनते हैं। मिठास केवल पकवानों में ही नहीं, शब्दों और व्यवहार में भी उतर आती है। आज के बदलते समय में होली का स्वरूप भी कुछ बदला है। रासायनिक रंगों और जल की अधिकता ने पर्यावरण संबंधी चिंताएँ बढ़ाई हैं। ऐसे में प्राकृतिक रंगों का उपयोग, जल-संरक्षण और मर्यादित उत्सव की आवश्यकता पहले से अधिक महसूस की जा रही है। होली का असली आनंद तभी है जब इसमें प्रेम और सम्मान का रंग प्रमुख हो, न कि अतिरेक का। होली हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में विविधता ही सौंदर्य है। जैसे अलग-अलग रंग मिलकर इंद्रधनुष रचते हैं, वैसे ही विभिन्न विचार, संस्कृतियाँ और समुदाय मिलकर समाज को समृद्ध बनाते हैं। यह पर्व कटुता को मिटाकर संवाद और सद्भाव का सेतु बनाता है। अंततः, होली केवल रंगों का खेल नहीं—यह मनुष्यता का उत्सव है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए प्रेम बाँटिए, हँसी साझा कीजिए और रिश्तों को रंगों की तरह सहेजिए। जब तक समाज में होली की यह आत्मा जीवित है, तब तक आशा और उल्लास के रंग कभी फीके नहीं पड़ेंगे।

पूर्वांचल प्रिंटर्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी